नवनीत

ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरी दुनिया एक ही परिवार है।

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA

काव्य | साहित्य | शिक्षा | संस्कृति | दर्शन
जुलाई - सितम्बर 2013, अंक 2 नंबर 4 - 6 (Vol 2. No. 4- 6) |
ISSN 2200 - 7644

www.bhavanaustralia.org

नवनीत भारत से

गैर को अपना बनाना

● आनंद गहलोत

'नाम' संज्ञा शब्द था, फ़ारसी ने 'बद' उपसर्ग जोड़कर 'बदनाम' कर दिया. 'बदनामी' का यह दाग शब्दों के संसार से कभी मिट नहीं सकता. संस्कृत शब्दों में अपना शब्द जोड़ यौगिक संकर शब्द गढ़ने में फ़ारसी ने कमाल किया है. हिंदी-उर्दू 'तोड़ना'/'तोड़' में ईरानी 'कमर' शब्द जुड़ 'कमरतोड़'शब्द भारी महंगाई को सबसे सशक्त ढंग से व्यक्त करने के लिए काफ़ी है.

फ़ारसी ने भारतीय भाषाओं को 'बाज़' शब्द कमाल का दिया. संस्कृत से भारतीय भाषाओं में आये 'पतंग' शब्द के आगे 'बाज़' लगाकर बना 'पतंगबाज़'- पतंगबाज़ी के व्यसनियों या शौकीनों के लिए. फ़ारसी में 'चालाक' शब्द तो था; लेकिन 'चालबाज़' 'चालबाज़ी' शब्दों का जन्म भारत की ज़मीन पर यहां के 'चाल' शब्द के साथ साठगांठ कर हुआ. 'धोखेबाज़' 'घपलेबाज़', 'बहानेबाज़' में आधा शब्द या प्रत्यय ईरानी है, बाकी शब्द यहीं की धरती का है, लेकिन अब ये पूरे शब्द ईरानी नहीं, भारतीय हैं.

फ़ारसी में संस्कृत के 'सज्जा' से 'साज़' बना, जिसका अर्थ सज्जा करने वाले, रूप निखारने वाले के साथ मरम्मत करनेवाला भी विकसित हुआ. 'घड़ी' शब्द ईरानी नहीं भारतीय है; लेकिन 'घड़ीसाज़' जो भारत में प्रचलित है, के निर्माण में आधा हाथ फ़ारसी का है. 'जालसाज़' का भी यही हाल है.

संस्कृत में 'वी' प्रत्यय लगकर 'मायावी' और 'मेधावी' शब्द थे. फ़ारसी 'दुनिया' शब्द को 'दुनियावी' (कोशकारों के अनुसार दुनियवी शुद्ध है) बनने में किसी और प्रत्यय का मुंह नहीं देखना पड़ा. क्या 'शर्मसार', 'मिलनसार' शब्द के ढर्रे पर बना है?

यद्यपि अरबी का 'हरम' (राजमहल का अंतःपुर) शब्द संस्कृत के 'हर्म्य' से लिया गया है; लेकिन अरबी शब्द 'महल' भात के 'राजमहल' और 'ताजमहल' शब्दों का चिरस्थायी हिस्सा बना.

फ़ारसी का 'बे' संस्कृत के उपसर्ग 'वि' (बिना, बगैर) का ईरानी रूप है. अनेक हिंदी-उर्दू शब्द (मैं फ़ारसी के 'बेहिसाब', 'बेशुमार' शब्दों की बात नहीं करता हूं) अस्तित्व में ही नहीं आते, अगर 'बे' नहीं होता जैसे बेढंगा, बेढब, बेतुका, बेलाग, बेसुधा, बेबस (विवश).

ईरानी का हिंदी-उर्दू व अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार को बढ़ाने में बेहद, बेजोड़ योगदान है. उसने भारतीय शब्द 'पसीना' के साथ मिलकर अपना 'खूनपसीना' बहाया है. 'खून' ईरानी है, 'पसीना' भारतीय है.

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अक्टूबर 2013

कुलपति उवाच

सर्वोत्तम यज्ञ

जवानी में मैं एपेन्डिसाइटिस की वेदना को दबाने का प्रयास, या मुंबई की घनघोर वर्षा में स्नान करने का साहस करता था. जब-जब मैं ऐसा करता था, तब-तब मुझे ऐसा लगता था कि मैं वस्तुत:'द्वन्द्वातीत' नहीं बन रहा हूं. इस कार्य में जो भय या वेदना थी, केवल उससे अपने मन को अलग कर रहा था, और क्षण भर के लिए उसे एक खूंटी से बांध रखता था. यह खूंटी गीता के निम्न श्लोक की निरंतर पूजन से पैदा हुई वृत्ति थी-

'हे कुंतीपुत्र, सर्दी-गर्मी और सुख-दुख देने वाले ये इंद्रिय और विषयों के संयोग क्षणभंगुर और अनित्य हैं. अर्थात आते-जाते हैं. हे भरत तू इनको सहन कर. हे पुरुषोत्तम, सुख-दुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये (इंद्रियों के विषय) व्याकुल नहीं कर सकते, वह मोक्ष पाने योग्य हो जाता है'

यह निरंतर की रटन आज्ञा बन गयी.

मुझे एक दूसरा अनुभव हुआ. उसने मार्ग दिखाया. मैंने सैकड़ों गीत कंठ स्थ कर लिये थे. मैंने देखा जब मैं कोई अच्छा गीत भावपूर्वक गाता, तब उससे मिलती हुई मनोदशा उत्पन्न कर लेता. इसमें मुझे जप का रहस्य देखने को मिला. पतंजलि ने कहा है, 'जप प्रणव का रटन और उसके साथ ही अर्थ के प्रति गहन चिंतन है'. इस वचन का अर्थ अब मेरी समझ में आया. श्री कृष्ण ने जप को सर्वोत्तम यज्ञ कहा है- यज्ञों में मैं जप यज्ञ हूं.

आधुनिक मनोवृत्ति मंत्रोच्चार की इस ना पर हंसती है. परंतु स्वयं सूचना का उपयोग करने वाले आधुनिक मनुष्यों की प्राथमिक क्रियाओं को भी, अंत में सूत्रोच्चार पर ही आना पड़ता है. मेस्मेरिज्म का जनक मेस्मर इलाज करते वक्त धीमे स्वर में मंत्रों को गाता और रोगियों से गवाता था. यह भी जप का एक रूप है.

(कुलपति के. एम. मुनशी भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे)

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अक्टूबर 2013

पर्वासी भारतीय दिवस

विदेशों में रहने वाले पर्वासी भारतीयों तथा भारतीय वन्शज के व्यक्तियों द्वारा भारतीय संस्कृति और उन्नति में किये जा रहे योगदान की सराहना करने के लिये प्रतिवर्ष भारत मे पर्वासी भारतीय दिवस का आयोजन किया जाता है। पर्वासी दिवस का आयोजन सन 2003 से आरम्भ हुआ। 2002 में, उस समय के सांसद श्री एल एम सिंघवी की अध्यक्षता में बनी एक समिति की सलाह पर, विदेशों में रहने वाले भारतीयों के हितो की रक्षा और उसमे सुधार लाने और उनके योगदान की सराहना करने के लिये प्रतिवर्ष् प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।

इस आयोजन के लिये, 9 जनवरी का दिन निश्चित किया गया क्योंकि 9 जनवरी 2015 के दिन ही महात्मा गाँधी विदेशों में 20 वर्ष् से भी अधिक रहने के बाद भारत वापिस आये थे। तत्पश्चात, प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस का उदघाटन् तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अट्ल बिहारी वाजपेयी ने 9 जनवरी 2003 को दिल्ली में किया था। आजकल प्रत्येक प्रवासी भारतीय दिवस का उदघाटन् भारत के राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से, 9 जनवरी के मुख्य समारोह से पहले, विश्व् के प्रमुख नगरो में जहाँ अधिक संख्या में भारतीय लोग रहते हैं, वहाँ पर क्षेत्रीय पर्वासी भारतीय् दिवस का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष भारत में होने वाले जनवरी 2014 के मुख्य समारोह से पहले, ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े नगर सिड्नी में क्षेत्रीय प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन 10-12 नवम्बर को किया जायेगा। यह इस प्रकार का 7वां क्षेत्रीय पर्वासी दिवस होगा। ऐसी आशा की जाती है कि इस समारोह में ऑस्ट्रेलिया के अतिरिक्त एशिया और प्रशांत के देशों से लगभग 1000 प्रतिनिधि भाग लेंगे।

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट के माध्यम से, भारतीय विद्या भवन इस समारोह की अतीम सफलता की कामना करता है।

शुभ कामनाओं सहित

कृष्ण कुमार गुप्ता

कृष्ण कुमार गुप्ता, संपादक

भारतीय राष्ट्र गान

जन गण मन

अधिनायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंगा

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंगा

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे

गाहे तव जयगाथा

जन गण मंगलदायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो

-ऋग्वेद 1-89-1

विषय-सूची

खिली बत्तीसी 8
क्या यहीं इस्तेमाल करेंगे 8
अशोक चक्रधर जी का ब्लॉग—चौं रे चम्पू 9
फूलों से शर्मिंदा हूं 9
शाश्वत संस्कृति संघ 11
बाल श्रम 19
अन्तिम प्यार 22
संत कबीरदास दोहावली 29
उत्तर 30
मीरां बाई पदावली 31
अभ्यास से उन्नति 31
हिन्दी दिवस ही क्यों? 34
अमृतसर आ गया है 39

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
निर्देशक मंडल

पदाधिकारी:

अध्यक्ष	सुरेन्द्रलाल मेहता
कार्यकारी सचिव	होमी नव्रोजी दस्तूर
प्रधान	शंकर धर
सचिव	श्रीधर कुमार कोंदेपुदी

अन्य निर्देशक:

कृष्ण कुमार गुप्ता, श्रीनिवासन वेंकटरमन, पल्लादम नारायणा सथानागोपाल, कल्पना श्रीराम, जगन्नाथन वीराराघवन, मोक्षा वत्स

अध्यक्ष: गंभीर वत्स ओ ऐ एम्

संरक्षक: महामहिम श्रीमती सुजाता सिंह (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम प्रहत शुक्ला (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम राजेंद्र सिंह राठौड़ (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त)

मानद जीवन संरक्षक: महामहिम एम. गणपथी (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत कौंसुल जनरल और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के संस्थापक)

प्रकाशक व प्रबंध संपादक:
गंभीर वत्स ओ ऐ एम्
president@bhavanaustralia.org

संपादक :
कृष्ण कुमार गुप्ता

भाषा संपादक :
परवीन दहिया

विज्ञापन हेतु:
pr@bhavanaustralia.org

Bharatiya Vidya Bhavan Australia
Suite 100 / 515 Kent Street,
Sydney NSW 2000

यह जरूरी नहीं है कि नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में योगदानकर्ताओं के विचार, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट या संपादक के विचार हों। नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट किसी भी योगदान लेख और प्रस्तुत पत्र को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। *कॉपीराइट:* प्रस्तुत सभी विज्ञापन और मूल संपादकीय सामग्री भवन ऑस्ट्रेलिया की संपत्ति है और इन्हें कॉपीराइट के मालिक की लिखित अनुमति बिना पुनः पेश नहीं किया जा सकता।

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट: अंक 2 नंबर 1 - 3, ISSN 2200 – 7644
मुख-पृष्ठ: सायंतन चक्रवर्ती, इंडिया एम्पायर, नई दिल्ली, भारत

Australian National Anthem

Australians all let us rejoice,
For we are young and free;

We've golden soil and wealth for toil;
Our home is girt by sea;

Our land abounds in nature's gifts
Of beauty rich and rare;

In history's page, let every stage
Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.

Beneath our radiant Southern Cross
We'll toil with hearts and hands;

To make this Commonwealth of ours
Renowned of all the lands;

For those who've come across the seas
We've boundless plains to share;

With courage let us all combine
To Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.

क्या यहीं इस्तेमाल करेंगे

(कुछ लोगों का उपचार सिर्फ़ कुतर्क होता है)

तलब होती है बावली,
क्योंकि रहती है उतावली।

श्रीमानजी ने
सिगरेट ख़रीदी
एक जनरल स्टोर से,
और फ़ौरन लगा ली
मुंह के छोर से।

ख़ुशी में गुनगुनाने लगे,
और वहीं सुलगाने लगे।

दुकानदार ने टोका,
सिगरेट जलाने से रोका—
श्रीमानजी!
मेहरबानी कीजिए,
पीनी है तो बाहर पीजिए।

श्रीमानजी बोले—
कमाल है,
ये तो बड़ा ही
अजीब सा
गोलमाल है।
पीने नहीं देते
तो बेचते क्यों हैं?

दुकानदार बोला—
इसका जवाब यों है
कि बेचते तो हम
लोटा भी हैं,
और बेचते
जमालगोटा भी हैं,
अगर
इन्हें ख़रीदकर
आप हमें
निहाल करेंगे,
तो क्या यहीं
उनका इस्तेमाल करेंगे?

—अशोक चक्रधर

फूलों से शर्मिंदा हूं

—चौं रे चम्पू! का सोच में पड़्यौ ऐ रे, कौन सी चिंता सताय रई ऐ?

—चिंता मुझे नहीं है, चचा। मेरे सहयोगी हैं राजीव जी, उनको तरह-तरह के विचार समय-समय पर आते रहते हैं। बड़े मौलिक, मूलभूत सवाल मानवीय चिंताओं से लबरेज़ रहते हैं। मैट्रो रेल में आते-जाते समय अपनी चिंतन-चक्की चलाते हैं। कल बोले कि कमाल है, जिस नाभि से गर्भस्थ शिशु को पूरा आहार-पोषण-जीन्स-ज्ञान मिलता है, जन्म लेने के बाद उस मार्ग को काट दिया जाता है, फिर भोजन

मुख से प्राप्त होता है। बाकी ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान। धीरे-धीरे आदमी नाभि की महत्ता को भूल जाता है। ऐसा क्यों होता है? उनकी बात में दम था चचा।

—जे तौ है! आदमी चौं नायं सोचै, सब सोचैं। रीतकाल के कबी सोचौ करते।

—हां चचा, रीतिकालीन कवियों को नाभि कामोत्तेजक लगती रही। नाभिदर्शना साड़ी पहनकर महिलाएं स्वयं को आकर्षक मानती हैं। पुरुष की नाभि में स्त्री की भी रुचि होती होगी, पर साहित्य ने उस पर कोई प्रकाश नहीं डाला। अपना एक अनुभव बताऊं हवाईजहाज का? मैंने तुक मिला कर लिख भी दिया था।

—सुना! अपनौ अनुभव जरूर सुना।

—हादसा अभी-अभी घटा है, मैं उस विमान में हूं जो बिल्कुल अभी फटा है। मेरी डायरी ब्लैक-बॉक्स तो है नहीं जो मिल जाएगी, घटना, दिमाग के ब्लैक-बॉक्स में रिल-मिल जाएगी! ओम् शांति! अले, अले, अले, अले मैं तो जीन्दा ऊं, औल विमान भी साबूत है, न कोई अर्थी न ताबूत है। क्या ये मेरी कल्पनाओं का खोट था! नहीं नहीं नहीं, विमान परिचारिका की आधी ढकी साड़ी से हुआ शक्तिशाली नाभिकीय ऊर्जा विस्फोट था। ओम शान्ति शान्ति शान्ति!!!

—वाह पट्ठे!

—आगे तो सुनो! मन में था पाप, अब करता है शांति का जाप। ख़ैर मना कि इतनी बड़ी दुर्घटना में बच गया बावले। भंवर से निकल आया जीवन की नाव ले। ग़नीमत है कि सांसों में धड़कन बाकी है, पर मानेगा कि सौंदर्य की वही विस्फोटक झांकी है जो आधी ढकी है, आधे से ही विस्फोट कर सकी है। संपूर्ण खुलेपन में क्या रखा है

अनाड़ी, आधे की झलक में और संपूर्ण की ललक में सबसे भव्य, सबसे मोहक सबसे विस्फोटक है– साड़ी।

—जामैं का सक!

—लेकिन चचा मुक्तिबोध ने सम्पूर्ण खुलेपन से नाभिनालबद्ध लोगों के बारे में लिखा।

—उनकी ऊ बता!

—उन्होंने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों पर प्रहार किया। साहित्यकार चुप हैं, कविजन निर्वाक् हैं। चिंतक, शिल्पकार, नर्तक चुप हैं। उन्हें जन-मन उद्देश्यों का दमन दिखाई नहीं देता। उनके ख़याल से ये सब गप है। उन्होंने लिखा, 'रक्तपायी वर्ग से नाभिनालबद्ध ये सब लोग, नपुंसक भोग-शिरा-जालों में उलझे'। ये वे लोग हैं जो खून चूसने वाले शोषकों से नाभिनालबद्ध हैं। अगर ख़ून चूसने वाले लोग न हों तो इनका आहार-पोषण बन्द हो जाए। रक्तपायी वर्ग कहां नहीं है? नेता हैं, शासन है, प्रशासन है। उनके बलबूते पलने वाली नौकरशाही है। सब वहीं से दाना-पानी पाते हैं। अगर ऊपर खाना-पीना बन्द हो जाए तो इन नाभिनालबद्ध लोगों का पोषण रुक जाए। रक्तपायी, पूंजीपायी, धर्मपायी वर्ग को खाने-पीने के बाद मुंह पोंछने का समय भी कहां मिलता है। जो थोड़ा-बहुत मिलता है उसमें नाभिनालबद्ध लोग वन्दन, चाटुकारिता, अभिनन्दनों का आयोजन कर देते हैं। ख़रीदे हुए लोग स्वामी की भाषा बोलते हैं। विडम्बना ये है कि जनता के पक्षधर बुद्धिजीवी भी चाहे-अनचाहे नाभिनालबद्ध हो जाते हैं।

—लल्ला तू उन्ते अलग ऐ का?

—नहीं चचा, उनसे अलग नहीं हूं। क्या बतलाऊं सुविधाओं में कैसे कैसे ज़िन्दा हूं, गुलदस्ते में फूल सजा कर फूलों से शर्मिंदा हूं। कहा जाता है कि रावण ने नाभि के तत्व से ही अपने दस सिरों का निर्माण किया था। भविष्य चिकित्सा विज्ञान भी क्लोनिंग के लिए नाभि के ऊतकों का सहारा ले रहा है। आगे पता नहीं क्या हो, लेकिन आज के रावण से कितने लोग नाभिनालबद्ध हैं? दस नहीं हैं, दस हजार नहीं हैं, नाभि से खाने वाले दस लाख से भी ज़्यादा हैं, पर बहुत ज़्यादा भी नहीं हैं। अच्छे तो वे बाकी लोग हैं जो खानाख़राब हैं। पेट में इसी बात का मरोड़ है।

—जादा मरोर ऐ तौ सुन! अपनी नाभी पै हींग मल्लै! सबरे दर्द खतम है जांगे। जे घरेलू नुस्खा अपनाय कै तौ देख।

—अशोक चक्रधर, उपाध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, यूट्यूब पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' के बारे में इस लिंक पर जाएं:
http://www.youtube.com/watch?v=BlK4lk_XiJM

SPRING OF INDIA

A celebration of festivals of India

10 November 2013
10:00am - 3:00pm

DARLING HARBOUR

SPECIAL ONE OFF COMMUNITY EVENT COMMEMORATING INDIAN DIASPORA IN AUSTRALIA AND THE PACIFIC REGION organized jointly by the Regional PBD and Bharatiya Vidya Bhavan Australia

The seventh Regional Pravasi Bharatiya Divas (PBD), celebrating cultural, historical, and political relationship between the Indian state and its Diasporas, will be held in Sydney, Australia from November 10-12, 2013. Previous Regional PBDs were held in: New York (2007), Singapore (2008), Hague (2009), Durban (2010), Toronto (2011), Mauritius 2012. Shri Vayalar Ravi, Hon. Minister of Overseas Indian Affairs and the Hon. Barry O'Farrell, Premier of NSW, jointly made the announcement on at 1530 Hrs AEST via a video link simultaneously in New Delhi and Sydney.

BHARATIYA VIDYA BHAVAN commemorates 75 years of its presence in INDIA and WORLDWIDE and 10 YEARS in AUSTRALIA.

The festival is free for everyone

For more details visit: www.bhavanaustralia.org; www.pbdsydney2013.com.au

Find on Facebook (www.facebook.com/bhavanaustralia).

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA
www.bhavanaustralia.org

Pravasi Bharatiya Divas

Sponsored by:

NSW GOVERNMENT | COMMUNITY RELATIONS COMMISSION For a multicultural NSW

NSW GOVERNMENT | Planning & Infrastructure | Sydney Harbour Foreshore Authority

शाश्वत संस्कृति संघ

जिस क्षण हम ग्रामीण संस्कृति के प्रवेश द्वार से ग्रामीण संस्कृति की ओर बढ़ने लगते हैं, उसी क्षण हमें लगता है कि हम बाह्य जगत को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। थोडा सा विरोधाभास ही लगता है। यदि हम मानव समाज के भविष्य हेतु कुछ भिन्न करने जा रहें हैं। 'पिग फेस पॉइंट' से ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स के लिवरपूल शहर की शुरुआत होती है। जोर्सेस नदी के तट पर बसा एक आत्मनिर्भर समाज को अपने में समायें एक सुन्दर शहर। प्रकृति की सुन्दर छटा एवं पर्यावरण की प्रतिकृति को अपने में लिए आधुनिक जीवनशैली का पर्याय बना शहर।

ईंट मिट्टी से बनी इमारतों के ऊपर दिखाई देने वाली पवन चक्की जो मुख्य निवास स्थान की ओर जाती दिखाई देती है। यहीं से फूल फल अन्यंत्र धान उगाने हेतु बनी टंकी जहाँ से पानी की दो नालियों से बहता हुआ पानी एक सुन्दर दृश्य उपस्थित करता है।

इस संपूर्ण योजना का श्रेय एक विशेष व्यक्तित्व को दिया जाता है, जो बड़े ही कर्मठ, उत्साही ध्येयनिष्ठ व्यक्ति हैं। 'श्रीमान ट्रेड ट्रेनर' जिन्हें ऐसा लगता है कि संसार का अग्रणी एवं समृद्ध राष्ट्र संसार के नैसर्गिक साधन संपत्ति को अनंत काल तक अपने बलबूते पर कायम रखेंगे। हम लोगों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि समयानुसार परिवर्तन होता ही है। इस पर ट्रेनरजी कहते हैं कि नैसर्गिक साधन संपत्ति बिना किसी कारण के समाप्त होते जा रही है।

यही कारण है कि आज नैसर्गिक साधन संपत्ति काफी समय तक टिक नहीं सकेगी। अत: जहाँ लोग एवं संपत्ति एकत्रित होकर आयें एवं शाश्वत समाज के निर्माण हेतु सतत प्रयत्नशील रहे। शाश्वत संस्कृति का अर्थ है permanent culture, यही श्री ट्रेनर का लक्ष्य है।

Permanent culture या शाश्वत संस्कृति का संपूर्ण रूप से उल्लेख यह है की परिणामकारक व योग्य स्थान का उपयोग जिसमें मानव जीवन, वन्य जीवन, सागसब्जी जल्संपत्ति का संकलित एकत्रित स्थिर सुयोजन, सुनियोजित क्रम जिससे पर्यावरण व उत्पादन क्षमता की शाश्वतता बनी रहे ऐसा सीधा संदेश श्री ट्रेनर जी का लक्ष्य है।

अमीर एवं समृद्ध देश अधिक से अधिक इस प्रकृति पर्यावरण को अपने लाभ के लिए प्रयोग में ला रहें हैं, 'बिना भविष्य की चिंता किये' प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहें हैं अत: वह दिन दूर नहीं जिस दिन प्रक्रति इसका उत्तर देगी। इसी कारण श्रीमान ट्रेनरजी ने अपना संपूर्ण जीवन प्रकृति के लिए समर्पित किया है। इनके पिता इ. स. 1940 के समय ली गयी अपनी संपूर्ण संपत्ति इस कार्यक्रम के लिए लगा दी है। मानव के अप्रतिम कल्पनाशक्ति का सुन्दर अविष्कार 'पिग फेस पॉइंट' सिड्नी (ऑस्ट्रेलिया) की उपनगरी के मध्य भाग में स्थित हैं। देखते ही अत्यंत लुभावनी, आकर्षक ग्रामीण जीवन को अपने में लिए, नैसर्गिक ग्रामीण जीवन को अपने में लिए नैसर्गिक साधन संपत्ति का भार लिए आधुनिक जीवन पद्दति का पर्याय 20 हेक्टर भूमि का परिवर्तित सुन्दर रूप।

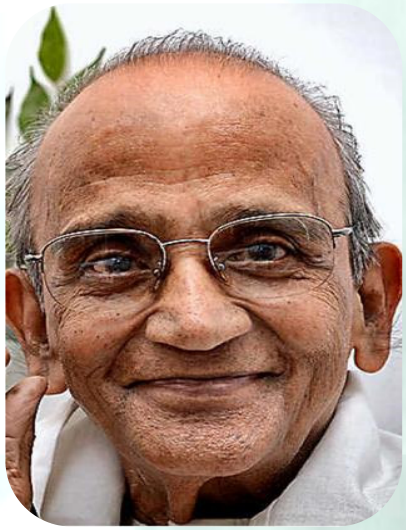

यहाँ पवन चक्की पानी के पंप चलाती है। इमारतें ईंट और मिट्टी से बनी हैं, यहीं पर फ़सल उत्पादन एवं सभी पदार्थों की फिर से तैयारी भी की जाती है। इसका संपूर्ण श्रेय श्री ट्रेनरजी को जाता है। इन्हीं से यह नगरी बसी है। इन्हें ऐसा लगता है की प्रगतिशील राष्ट्र एवं उत्तम समाज के निर्माण के लिए एक ऐसी साधन संपत्ति सुलभ आधारशिला न रखी जाए तो उनके हाथ कुछ भी न बचेगा। श्री ट्रेनरजी का यह स्वप्न है वे स्वयं कष्ट उठाकर स्वयं की भूसंपदा को इस प्रकार रूपांतरित कर अपना सपना साकार करने का प्रयास करें। सादे जीवन के लिए सादा रहन सहन। दो उदभुत मानव निर्मित पवन चक्की के द्वारा पानी के पंप चलकर नालियों द्वारा पानी भूमि के अंतस्थल तक

पहुँचाने का कार्य उसी में प्रकृति के सचेत जीव बत्तख, ख़रगोश, मुर्गियाँ आदि अंडे देते हुए, मधुमक्खियाँ शहद देते हुए जीवन यापन करते हैं तो दूसरी और इन पवन चक्कियों से साग सब्जी बनती है। यहीं पर मिटटी, ईंट से बनी इमारतें यह सब कुछ श्री ट्रेनर की प्रेरणा धर्म के भीतर एक अलग विचारधारा का चिह्न है।

हमारे समाज में केवल दो दोष हैं, वे कहतें हैं एक व्यापार में प्रतियोगिता की मान्यता है, जिसमे समाज जो कुछ करता है, वह सबसे अधिक उचित है। दूसरा ऐसा की ऊँचें वर्ग का रहन-सहन अपनी कल्पना से अधिक ऐशोआराम की जिंदगी। सादा जीवन अर्थात बिना किसी इच्छा के जीवनयापन करना। तात्पर्य यह है कि आराम और अच्छा स्वास्थ्य इस पर ही ध्यान केन्द्रित कर इसे किस प्रकार प्राप्त करें, इसी साध्य सामग्री को किस प्रकार हासिल करें।

पिग फेस पॉइंट का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि शिक्षा को अपने पर ढाल लें। स्कूल मनोरंजन एवं अभिभाव यह सब कुछ ट्रेनर के निवास स्थान पर ही प्राप्त है। इनके संपर्क में कुछ बातें सीखने को मिलती हैं; उदाहरणार्थ, तीसरे विश्व की तुलना में अमेरिका जो साधन संपत्ति प्रयोग में ला रहा है, उसकी स्पष्टता, दूसरी बात अर्थात अपने सूर्यमंडल की प्रतिकृति जिसमे जमीन के भीतर छिपी रहस्यमय कड़ियाँ जो सूर्य की दूरी के अंतर को दर्शाता है।

इन सभी को पल भर भुला कर एक अन्य चिह्न नजर आये इसी उपलक्ष्य में भारतीय नेता महात्मा गाँधी का वक्तव्य उल्लेखित है-

'अमीर लोग अधिक सादा जीवन यापन करें
ताकि गरीब लोग कम से कम जी सकें।'
-रमेशचन्द्र

अनमोल वचन

- उस आस्था का कोई मूल्य नहीं जिसे आचरण में न लाया जा सके । ~ महात्मा गांधी
- जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो। ~ कन्फ्यूशियस
- जो दूसरों की स्वाधीनता छीनते हैं, वास्तव में कायर हैं। ~ अब्राहम लिंकन
- वृक्ष, सरोवर, सज्जन और मेघ-ये चारों परमार्थ हेतु देह धारण करते हैं। ~ महात्मा कबीर
- किसी मूर्ख व्यक्ति के लिए किताबें उतनी ही उपयोगी हैं जितना कि एक अंधे व्यक्ति के लिए आईना। ~ चाणक्य
- विचारों के युद्ध में, पुस्तकें ही अस्त्र हैं। ~ जार्ज बर्नार्ड शॉ

तितली बल शाली

मैं तितली थी भोली भाली
बगियन उड़ती डाली डाली
भवरें करते गुंजन गुंजन
सब करते ताली ताली

मैं तितली थी भोली
भाली
बगियन उड़ती डाली
डाली

घोर अँधेरा दिन में
हुआ
तूफां ने मुझ को आ
घेरा
पंख हुए मेरे चूर चूर
जीवन था फिर खाली खाली

मैं तितली थी भोली भाली
बगियन बैठी डाली डाली

अंतरमन से आवाज़ उठी
तेरी मंजिल है अभी दूर कहीं

कर ध्यान ॐ का धूमी रमा
मैं उठी धरा से ज्यों काली

मैं तितली थी भोली भाली
बगिया छोड़ी, छोड़ा माली

मंजिल को पाने निकल पड़ी
तूफान को ढाने निकल पड़ी
आये जो राहों में रोड़े
उन्हें यार बना मंजिल पाली

मैं तितली हूँ, पर बल शाली
जग मैं चहकूं डाली डाली

-नलिन कान्त
शारदा

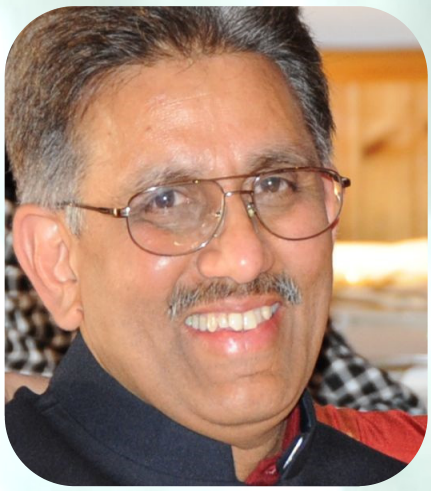

महात्मा गाँधी और विश्व

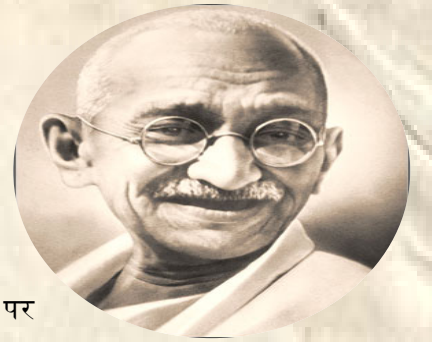

महात्मा गाँधी सम्पूर्ण विश्व पटल पर सिर्फ़ एक नाम ही नहीं, अपितु शांति और अहिंसा का एक प्रमुख प्रतीक हैं। महात्मा गाँधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की अवधारणा फलित थी, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह, शान्ति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुये अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि- 'हज़ार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी, कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई इन्सान पृथ्वी पर कभी आया था।' संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गाँधी जयन्ती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाये जाने की घोषणा की।

लोकप्रिय राजनेता

महात्मा गाँधी दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय राजनेताओं और व्यक्तित्व में से हैं। यही कारण है कि प्राय: अधिकतर देशों ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किये हैं। देश विदेश के टिकटों में देखें, तो गाँधी जी का पूरा जीवन चरित्र पाया जा सकता है। सामान्यतः डाक टिकट एक छोटा-सा काग़ज़ का टुकड़ा दिखता है, पर इसका महत्त्व और कीमत दोनों ही इससे काफ़ी ज़्यादा है। डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवम् उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। यह किसी भी राष्ट्र के लोगों, उनकी आस्था व दर्शन, ऐतिहासिकता, संस्कृति, विरासत एवं उनकी आकांक्षाओं व आशाओं का प्रतीक है। ऐसे में डाक-टिकटों पर स्थान पाना गौरव की बात है।

भारत में सर्वाधिक बार डाक-टिकटों पर स्थान पाने वालों में गाँधी जी प्रथम हैं। यहाँ तक कि आज़ाद भारत में वे प्रथम व्यक्तित्व थे, जिन पर डाक टिकट जारी हुआ। बहुत कम लोगों को पता होगा, कि भारत को ग़ुलामी के शिकंजे में कसने वाले ब्रिटेन ने जब पहली दफ़ा किसी महापुरुष पर डाक टिकट निकाला, तो वह महात्मा गाँधी ही थे। इससे पहले ब्रिटेन में डाक टिकट पर केवल राजा या रानी के ही चित्र छापे जाते थे। यह टिकट रस्तोगी के संग्रह में शामिल है। डाक टिकट पर पहले गाँधी जी के लिए बापू शब्द का प्रयोग हुआ था, मगर बाद की टिकटों पर महात्मा गाँधी लिखा जाने लगा।

शांति के राजदूत

कई देशों ने महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी, 125वीं जयंती व भारत की 50वीं स्वतंत्रता वर्षगाँठ पर कई प्रकार के अलग-अलग मूल्यों के डाक टिकट व डाक सामग्रियाँ समय–समय पर जारी की हैं। शांति के मसीहा व सहस्त्राब्दि के नायक के रूप में भी अनेक देशों ने, गांधी जी के चित्रों को आधार बनाकर डाक टिकट व अन्य डाक सामग्रियाँ जारी की हैं। कई देशों ने महात्मा गांधी पर डाक टिकट ही नहीं, बल्कि मिनीएचर और सोविनियर शीट्स जारी की। उन्हें इस बात की हैरानी है कि, दुनिया के अधिकांश देशों ने बापू पर टिकट जारी कर उन्हें सम्मान दिया, लेकिन पाकिस्तान ने नहीं। शांति के इस दूत की उपेक्षा की शायद वजह यह है कि, पाकिस्तान में कभी भी शांति बहाल नहीं हुई। भारतवर्ष से बाहर के देशों में लगभग 100 से भी अधिक ने गांधी जी के जीवन से जुडे विभिन्न पहलुओं को केंद्र में रखते हुए उनके जीवन पर आधारित विभिन्न डाक सामग्रियाँ व डाक टिकट जारी किए हैं। इन देशों में विश्व के सभी महाद्वीपों के देश शामिल हैं। *स्रोत: www.india.gov.in (भारत का राष्ट्रीय पोर्टल), www.mobi.bharatdiscovery.org*

महात्मा गाँधी का जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने असाधारण कार्यों एवं अहिंसावादी विचारों से पूरे विश्व की सोच बदल दी। आज़ादी एवं शांति स्थापना ही उनका एक मात्र लक्ष्य था। उनके इसी प्रयास से भारत एवं दक्षिण अफ्रीका के कई प्रमुख आन्दोलनों को नई दिशा मिली। भारतीय राष्ट्रीय पोर्टल इस विशेष आलेख के माध्यम से 'बापू' को उनकी जयंती पर सहृदय श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अंशदाता: गंभीर वत्स ओ ऐ एम्, अध्यक्ष भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया

पल्लवी शारदा की "बेशरम" फिल्म का पहला शो

दो अक्टूबर यूं तो गांधी जी और लाल बहादुर शाष्त्री जी जैसी बड़ी हस्तियों का जन्म दिन है, जो भारतीय समुदाय के लोग देश विदेश में भी रह कर बड़ी श्रध्धा के साथ हर साल मनाते है।

किन्तु इस वर्ष का २ अक्टूबर का दिन मेरे लिए और भी विशेष दिन था, क्यों की मैं बालीवुड फिल्म "बेशरम" का विशेष शो (Premier show) मेलबर्न में अटेंड करने जा रहा था।

मेलबर्न वासियों के लिए २ अक्टूबर २०१३ की शाम का अवसर एक पर्व से कम न था, और ख़ास तौर पर शारदा परिवार और उनके मित्रों के लिए, क्यों की "बेशरम" फिल्म की हीरोइन (Heroine) पल्लवी शारदा कोई और नहीं, मेलबर्न (Melbourne) में टेलर्स लेक्स (Taylors Lakes) निवासी प्रोफ़ेसर नलिन शारदा और प्रोफ़ेसर हेमा शारदा की बेटी है।

दो अक्टूबर की शाम टेलर्स लेक्स की आस्ट्रेलिया ड्राइव (Australia Drive) पर शाम ७ बजे से कारों का तांता लगे जा रहा था। इस अवसर पर भारतीय समुदाय ही नहीं और अनेकों संस्थानों के लोग एक एक कर आये जा रहे थे। सब नलिन जी को पल्लवी की उपलब्धियों के लिए बधाई दे रहे थे। कुछ लोग बेशर्मी पर उतारू थे और वह विशेष चटकीली पोशाक पहने हुए थे। नलिन जी भी महाराजा जैसी पगड़ी कभी पहनते थे, तो कभी उतारते थे।

कुछ लोग तो घूँट लगा कर खुद को फिल्म का हीरो समझ रहे थे। पर अधिक तर लोग अच्छे अच्छे कपड़ों से सजे थे। घर मोमबती और लाईट से जगमगा रहा था। सभी लोग फिंगर फ़ूड (finger food) खा रहे थे, और फिल्म से ज्यादा पल्लवी की बात कर रहे थे। इतनी कम उम्र मे, पढाई और फिल्म में चोटी पर पहुँचना यह सब की ज़ुबा पर चर्चा का विषय था। पर उसका राज़ यह भी था की फिल्म के बारे में पूरी तरह से हीरोइन के पिता नलिन जी को भी नहीं पता था कि उसमें क्या है।

लोगों ने विशेष तौर पर टी. वी. पर घेरा डाला हुआ था, और फोटोग्राफर बीच बीच में फ्लैश मारे जा रहे थे। थोड़ी देर में एक भारतीय चैनल पर "बेशरम" का गाना "लुट गए तेरे मोहल्ले" आ गया और पल्लवी को देख सब ख़ुशी से भरपूर किलकारियां भरने लगे। इसी बीच किसी ने कहा चुप चुप, एस. बी. एस. रेडियो सुनिए, "बेशरम" पर एक रिपोर्ट आ रही है। और सब मंत्रमुग्ध सुनने लग गए। एस. बी. एस. की जानी मानी एनाउंसर, कुमुद मिरानी जी पल्लवी का इंटरव्यू ले रहीं थीं।

चूंकि टी. वी. पर भीड़ लगी थी, ठीक से दिख नहीं रहा था कि क्या हो रहा है, पता चला की एक टी. वी. स्क्रीन स्काइप (SKYPE) से कनेक्टेड था और मुम्बई में पल्लवी और उनकी माँ हेमा शारदा फिल्म का जश्न वहां बैठ कर एक साथ मना रही हैं। साथ में मेलबर्न में घर पर आये मेहमानों से भी वर्चुअल मीटिंग हो रही थी। सब एक एक कर पल्लवी और हेमाँ जी से हेलो कर रहे थे। अधिकतर लोग कह रहे थे हेमा जी आप वहां क्या कर रही हो आपको यहाँ होना चाहिए था। पर प्रोग्राम इस तरह था की पल्लवी और हेमा जी मुम्बईमें भले हों, पहले घर में पार्टी होगी लोग पल्लवी से स्काइप पर मिलेगें और बाद में सभी लोग वाटर गार्डन (Watergardens) सिनेमा में एक साथ "बेशरम" देखेंगे ।

अभी खाना पीना, गाना बजाना चल ही रहा था, की रिची मदान, मेलबर्न के डी. जे. किंग (DJ King), ढोल लेकर आगये। वह स्वयं कलाकार हैं उन्होंने पल्लवी को बचपन से डांस करते देखा है और कितने ही मौकों पर उस के डी जे रह चुके हैं। ढोल

पीटना शुरू हो, इससे पहले ही लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया चुप होजाइये पल्लवी पे रिपोर्ट आने बाली है। सब लोग टी. वी. की तरफ भाग लिए, पूछा तो पता चला की पल्लवी पे और फिल्म "बेशरम" पर ABC चैनल की ७.३० रिपोर्ट (7.30 Report) पर एक विशेष रिपोर्ट आने बाली है। सब एक दूसरे को चुप करने के लिए हल्ला मचाये जा रहे थे, "भाई चुप होजाओ ७.३० रिपोर्ट आने वाली है"।

जैसे ही ७.३० बजे कि और टी. वी. प्रजेंटर ने अंग्रजी ढंग में कहा "बेशाम" (न की बेशरम), सब हंसे और फिर चुप हो गये, और उत्सुकता के साथ उसे सुनने लगे। यह विशेष रिपोर्ट ABC ने बम्बई और मेलबर्न में तैयार की थी, जिसमें फिल्म कैसे बनी, फिल्म डाइरेक्टर, फिल्म हीरो के साथ इंटरव्यू के साथ साथ पल्लवी का विशेष परिचय और पल्लवी की फैमिली बैक-ग्राउंड के बारे में बताया गया। इस रिपोर्ट में फिल्म के डायरेक्टर अभिनव कश्यप, जिन्हें "दबंग डाइरेक्टर", कहा जाता है बताया की पल्लवी को कितने कम्पटीशन के बाद चुना गया और उसका भविष्य इस इंडस्ट्री में कैसे उज्जवल होगा, सब लोग यह सुन कर दंग रह गए, क्यों की अक्सर कोई भी डाइरेक्टर या प्रोडूसर करोड़ों की लागत वाली फिल्म में नयी हीरोइन के साथ रिस्क नहीं लेना चाहता। पर अभिनव बोले, " We have a potential star in our hand".

जैसे ही प्रेजेंटर ने मेलबर्न और टेलर्स लेक्स का नाम लिया की सभी अंग्रेज और भारतीय अड़ोसी पड़ोसी वाह वाह करने लगे। और स्क्रीन पर जैसे ही नलिन जी का इंटरव्यू शुरू हुआ की सभी उपस्थित लोग उछल पड़े क्यों की यह किसी को भी नहीं मालूम था, यहाँ तकि की मुझे भी। नलिन जी का पूरा इंटरव्यू पल्लवी की शालीनता, कर्मठता और लगन पर था, बीच बीच में फिल्म के भड़कते चहकते गाने सुन कर सब वाहवाह करने लगे।

अभी ७:३० रिपोर्ट ख़तम होने वाली ही थी कि मैंने रिची को भड़का दिया की उसने ढोल पीटना शुरू कर दिया; और उसकी थाप पर लोग भांगड़ा करने कूद पड़े। सब जम कर नाचे, यहाँ तक की डिप्टी कौंसल जनरल कावरा जी भी अपने को नहीं रोक पाये। आज हर कोई अपने को फिल्म के हीरो से कम नहीं समझ रहा था; जिसने पहले कभी नहीं नाचा वह भी कोशिश कर रहा था।

धूम धडाका यूं ही चलता रहा और बीच में लोग कहने लगे अब सिनेमा पर पहुँचना चाहिए वरना पार्किंग मिलना मुश्किल हो जायेगा। सिनेमा घर से यद्यपि २ किलोमीटर से भी कम दूर था। सब एक एक कर पहुँच गए। सिनेमा पर एक ग्रुप में बहुत सारे लोग देख कर सिनेमा बाले चकरा रहे थे, पहले इतने इन्डियन एक साथ मूवी में हल्ला करते नहीं आये होंगे। बाद में जब उन्हें पता चला की इस फिल्म की हीरोइन तो पास में रहती है तो वो भी अचंभित हुए और बड़े खुश हुए, और यहाँ तक की बहुतसे लोगों से टिकट कलेक्ट करना भी भूल गये।

हाल लगभग पूरा भरा था जिसमें करीब आधे लोग पार्टी से सीधे आये थे, पर साथ ही और लोग भी फिल्म देखने आये थे। सिनेमा वालों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी की लोग अपनी सीट पर बैठे हैं, की नहे। मैं खुद सीढी पर बैठ कर फिल्म देख रहा था, क्यों की मेरी सीट पर और कोई बैठ गया था।

कुछ लोग जो आम तौर से फिल्म देखने आये उन्हें काना फूसी से पता चला की इस फिल्म की हीरोइन पास में ही टेलर्स लेक्स में रहती है, तो और जानकारी के लिए बड़े उत्सुक हुए। इंटरवल में लोगों ने नलिन जी से अनुरोध किया की वह अन्य लोगों को बताएं की वह हीरोइन के पिता हैं, साथ में पल्लवी और फिल्म के बारे में भी दो शब्द कहें।

उन्होंने बताया की पल्लवी का "बेशरम" फिल्म में हीरोइन का रोल किस तरह मिला। इस फिल्म के आडीशन के लिए पल्लवी को कैसे जानी मानी फिल्म हीरोइनों के साथ कम्पीट करना पडा, और कैसे उसके जीवन में एक नया मोड़ आया जो उसे फिल्म जगत के सुपर स्टार रणबीर कपूर और अभिनव कश्यप जैसे दबंग डाइरेक्टर के साथ काम करने का मौक़ा मिला।

पल्लवी के किसी दूर दूर के भी रिश्तेदार ने फिल्म में काम नहीं किया। अभिनव कश्यप जैसे डाइरेक्टर ने पल्लवी के पहले किये हुए पत्रों को जांचा परखा, फिर आडीशन का मौका यह कह कर दिया की अगर तुम इन सबको बीट करके दिखाओ तभी एंट्री पासकती हो। पल्लवी आडीशन में सफल हुयी और तब बुलंदी के इस मुकाम पर पंहुची।

नलिन जी ने बताया पल्लवी पर्थ (Perth) में पैदा हुयी, पर पली और बड़ी हुयी मेलबर्न में। वह आस्ट्रेलिया की चुनी हुयी मेलबर्न यूनिवर्सिटी की लौ और मीडिया (Law and Media) की डबल डिग्री लेकर एक नए रास्ते पर निकल पडी। फिल्म वैसे तो मीडिया से मिलता जुलता शब्द लगता है, फिर भी फिल्म के परदे के बारे में लिखना मीडिया का हो सकता है, पर फिल्म के परदे पर एक्टिंग करना पल्लवी का एक सपना रहा, बचपन से।

पल्लवी ने ठान ली सो ठान ली, और अकेले ही निकल पडी इस मंजिल की ओर। लौ की डिग्री पास करते ही उसे बड़ी कंपनी में एक नौकरी मिली, पर कुछ बहाना मार कर ठुकरा दिया इस जाब आफर को। और फिर, कभी फ़्रांस तो कभी स्वीजरलैंड घूमना, नयी भाषाएँ सीखना, नए नए लोगों से मिलना, तो कभी मेड्रिड से अमरीका भागती रही। अंततः अपनी मंजिल की तलाश में मेलबर्न से मुम्बई पहुँच ही गयी।

शुरू मैं उसे एक छोटा सा पड़ाव मिला, और उसे "माई नेम इज खान" (My Name is Khan), जिसके हीरो शाररुख खान थे, उसमें में एक छोटा सा रोल मिल ही गया। पल्लवी को एक्टिंग का तजुर्बा भले ही ना हो पर उसे भारत नाट्यम की चैम्पियन जरूर कहा जा सकता है, जो उसका बचपन से शौक रहा साथ ही उसने इस क्षेत्र में महारथ भी हासिल की, तीन घटे का अरंगेत्रम ५०० लोगों के सामने प्रस्त्यत कर के।

शाररुख जैसे हीरो से यूं तो मिलना आसान नहीं था, पर उनके साथ काम और बात चीत करके हौसला अफज़ाई हुयी। शाहरुख़ जी ने प्यार से बात चीत की और कहा की कभी हिम्मत मत हारना। उन जैसे नम्र स्वभाव के हीरो के साथ काम करके उत्साह बर्धन खूब हुआ।

इसी बीच पल्लवी ने २०१० मिस इंडियन आत्स्रेल्याँ (2012 Miss India Australia) का खिताब जीता। बाद में तकालीन प्रधान मंत्री जूलिया गिलार्ड के आमंत्रण पर भारत में ओज फेस्ट (Oz Fest) की दूत बन कर भारत मैं ऑस्ट्रेलिया का नाम रौशन किया।

फिर तो गाडी किक स्टार्ट हो गई, और पल्लवी ने अनेकों नृत्य और कला के नॅशनल (National) और इंटर नॅशनल (International) आयोजनों में भाग लिया और फिल्म जगत की बड़ी बड़ी हस्तियों से मिलना मिलाना शुरू कर दिया। इसी बीच “हेरोइन” (Heroine), “लव ब्रेकु अप ज़िंदगी” (Love Break Zindagi), “वाक् अवे” (Walkaway), जैसी फिल्मों में भी काम करने का मौक़ा मिल गया।

जब उसके न्रत्य के हुनर को फिल्म जगत ने पहचाना तो जाने माने फिल्म जगत के कलाकार मनोज बाजपेयी के साथ फिल्म "दस तोला" में एक अहम् भूमिका निभाने का अवसर मिला। लोगों का कहना है की इस फिल्म में पल्लवी की एक्टिंग, और स्टोरी लाइन बहुत अच्छी है; मौक़ा मिले तो आप भी इस फिल्म को अवश्य देखें।

पल्लवी ने इस ३ साल के दौर में कई फिल्मों में काम किया जिनमें एक आस्ट्रेलियन अंगरेजी कामेडी फिल्म "सेव योर लेग्स" (Save Your Legs) भी है । “बेशरम” फिल्म में चोटी के कलाकार रणबीर कपूर के साथ हीरोइन का रोल ऐसे ही है जैसे सड़क पर चल रहे इंसान को सीधे ही हिमालय की चोटी पर चढने का अभियान ३ वर्ष में पूरा करना हो।

“बेशरम” में प्रभावशाली एक्टिंग दिखाने के पश्चात, पल्लवी का दौर ज़ोर से जारी है| उसकी नयी फ़िल्में जरूर देखें जिसमें में उसका छुपा हुआ “क्लासिकल डांस” का हुनर और भी उभर कर आएगा।

-डा. सुभाष शर्मा

अनुशासन प्रमुख (रखरखाव प्रबंधन)

सेंट्रल क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी

बाल श्रम

बाल श्रम ऐसा कोइ भी कार्य हैं जिस से बालक की पढ़ाई में रूकावट आये और साथ में ही उन के जीवन से बचपन चुरा लेता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम सभा के मुताबिक़ बाल श्रम ऐसे काम हैं जो बच्चों को नहीं करने चाहियें क्योंकि या तो वह उस काम के लिये छोटी उम्र के हैं या वह काम उनके िलये हािनकारक है। भारत में बाल श्रम दुनिया में सब से ज़्यादा होती है। २०९० में जो सरकार ने अंकड़ो िनकाले थे वह कहते है कि १७० करोड़ बच्चें बाल मज़दूरी कर रहें थे। इस के बाद सरकार ने कोइ अंकड़ निकाले हैं, मगर बाल श्रम आज भी बड़ रहीं है। इससे उन बच्चों, उनके परिवार और हमारे देश पर भी बड़ा असर होता है। भारतिय बच्चों में से ३४% बाल श्रमिक है।

बाल श्रम से बच्चों पर बहुत गम्भीर प्रभाव होते हैं। इसका सबसे बड़ा असर उनकी पढ़ाइ पर होता है। अगर बच्चा श्रम के साथ में पढ़ाइ भी करते है तो उसे बाल श्रम नहीं कह सकते है। इस मज़दूरी का उनके शारीिरक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में रूकावट आ जाती हैं।

शारीिरक रूप से कमज़ोर हो जाता है। सहीं पोषण न मिलने से उनके शरीर में ताक़त नहीं होती है। थकान, शरीर का दर्द और आसानी से नील पड़ना तो उनके लिय रोज़ की बात है। यह अकसर बोने रह जाते है। छोटे कद के साथ-साथ उनकी हड्डियाँ कालसियम कमी के वजह से पर्याप्त से कम विकसित होती हैं। क्योंकि शरीर को जरूरी पोशन चाहिये होते बह उनको नहीं मिलते हैं।

मानसिक रूप से उनका दिन काम से शुरू हो कर काम पर ही ख़त्म हो जाता है। इस हि िलये उन के दिमाग़ का पुरी तरह से प्रगति नहीं हो पाता है। बाल श्रम से बच्चों की पढ़ाइ रूक जाती है जिससे बच्चों का दिमाग़ बचपन की स्थिति पर रुक जाता है। बाल श्रम को कई मानसिक बिमािरयाँ हो जाती है जैसे कि अल्पकालिक या दीर्घकालीन स्मृति हानी या शब्दस्मृति तिर्भंश। उन्हे खिन्नता भी होती है और ग़ुस्सा भी जल्दी आ सकता है। हमारा साधारण जीवन उनके नसीब में नहीं है क्योंकि उनका पुरा दिन में १८ घंटे एक अंधेरे, बाँसी कमरे में कड़ी मेहनत करते हुयी निकलता है। खुली हया, एक हलकापन और बचपन से जुड़ी ख़ुशी उनके लिय केवल एक सपना है। इस श्रम के वेज से उन्हे अपनी खुभियाँ, स्वाभाविक और मनोभाव खोजने का समे ही नहीं मिलता।

बाल श्रमिक के लिय नैतिक का भी कोइ मूल्य नहीं होता। इ। खुद पर हुये अन्याय को बह जीवन की सच्चाइ मान लेते हैं जिसके वजह से सही ग़लत का अंतर नहीं समझ सकते हैं। इस लिय उन्हे दारु, बीड़ी और चोरी कोइ बड़ी बात नहीं होती।

सामाजिक रूप में इसका भारी असर होता बच्चों पर और देश पर भी। बच्चे श्रम करते हुये दोस्ती का मूल्य ही भूल जाते है और चाहे वह एक दो दोस्त बना भी ले, उनका लोगों से विश्वास एक हद तक उठ जाता है। वह समाज से भिचड़े-भिचड़े रहें ते हैं। वह सामाजिक को विभाजित कर देता है।

आज-कल भारतिय लोगो को तो जैसे बाल श्रमक दिख ते हि न हो। वह देख के भी इन बच्चों को अनदेखा कर देते है।

इसके देश पर और भी कइ बुरे असर होते है। यह निरक्षरता बडंाता है, और कोंकी इन बच्चों को शिक्षा नहीं अगली पिछड़ी में शायद और प्रतिशत लोगों के पास काम ना हो। और- तो- और

देश की कमाया भी बाल श्रम बड़ा ती है। भारत की जनसंख्या बहुत ज़्यादा है, जिस के बाल श्रम का घेरा समभंद है।

कोंकी बड़ें हो कर वह अच्छी नौकरी नहीं दूंद पाते है, इनके बचंचो को भी बाल श्रमिक बनना पड़त है, जिससे यह चक्र और भी अवीनाशी हो जाता है।

पर दुहरी तरफ़ इस के कइ अच्छे असर भी है। इस्से कम-से-कम एक परिवार का रेत तो भर जाता है। भूके मरने से, या इस बात के दर के साथ जीने से शायद काम करना ही भेहेतर है। और कमाय हुये पैसों से छोटे भाइयों बहनों को शिक्षा दि जा सकती है।

बाल श्रम के पिछे कइ कारण है जिनहै ३ हिससों मे बाता जा सकता है, परिवार, नियोंकता और सरकार। परिवार की ज़रूरतें ही इस समस्या का मुख्य कारण है। बच्चों के अभिभावकों को गवार होना, उनको काम ना मिलवाने यह मजबूरियाँ की वजह से काम ना कर पाना, बच्चों के कोमल कंधों पर पूरे घर का भोज डाल देता है। अगर परिवार को कोइ क़र्ज़ झुकाना हो, तो भी बच्चों को इस दलदल में धकेल दिया जाता है। भारत में ८०% बच्चे बाल श्रम करते है।

नियोंकताओं का भी इस के पिछे एक बड़ा हाथ होता है। उनको चाहिये के यह अपना समान सस्ते में बेच सके, ताकी ज़्यादा समान बिके। उन्हे इन बच्चों को दिन के ५० रूपये देने पड़ते है। लेकिन एक वयस्क को १२० रूपये देने पड़ ते हे। इसके अलावा बच्चों को डराना, धमकाना बहुत असान होता है। जिस बात का फ़ायदा उठा कर नियोंकता उनसे १७ घंटे तक अंधेरे, बाँसी कमरे में काम करवाते है।

देश की कमाया भी बाल श्रम बड़ा ती है। भारत की जनसंख्या बहुत ज़्यादा है, जिस के बाल श्रम का घेरा समभंद है। हमने क़ानून तो बना लिये है जैसे की child convention act जिसमें साफ़ लिखा है के बचंचो से काम कर वाना और उनकी पढ़ाइ रोकना दोनो ग़ैरक़ानूनी है, मदर यह लागु नहीं हो रहे है। २०१० में एसे ५५०० मुद्दे समने अड़े थे जाहा बाल श्रम का इस्तेमाल हो रहा था, जिन में से सिर्फ़ ३ की कार्यवाही हुइ। इससे कइ ज़्यादा मामले ते एसे थे जो छुट गय। हमारे रक्षक ही इन बच्चों के भक्षण बन गये।

सरका ने एस कइ नियम बनाये है तो बाल श्रम के खिटलाफ है, जैसे कि बच्चों का रोज़गार अधिनियम (१९३८), - जिस साफ़ लिखा है के बच्चे पढ़ाइ छोड़ कर श्रम नहीं कर सकते है, बाल श्रम निषेध एवं विनियमन अधिनियम (१९४८)- जिसमें बाल श्रम के विरूद्ध मैं क़ानून है और भारतीय कारख़ाना अधिनियम (१९४८)- जिससे बच्चों से कारख़ानों में काम कर

वाना हर-क़ानूनी बताया जाता है। पर बड़ती जन - संख्य ने बहुत मुश्किल बना दिया है, देश के हर कोने मैं पहुँच पाना, और हर परिवार को इन क़ानूनों के बारे मैं समझाना। इसके अलावा उन्होंने संस्थाये भी बनाइ है जैसे कि गुरुपदस्यामी कोमिटी जो बाल श्रम के पीछे के कारण धूंन उन्हे ख़त्म करना चाहती है और इससे जुड़े क़ानून का असर देख कर उन्हे बदलती भी है। पर काग़ज़ी क़ानून से इन बच्चों को ज़्यादा फ़ायदा नहीं होता, क्योंकि इन बालिकों को अपने हक़ पत ही नहीं होते।

एसी कइ संस्थाये है जो, सरकार से अलग, बाल श्रम का हल निकाल ना चाहती है। United Nations ने भी इसके ख़िलाफ़ बहुत कुछ करा है। उन्होंने हुमन साइट्स डेकलरेशन में लिखा है, जीस में २४वें जिन में लिखा है कि हर इसांन को काम करने का, आराम करने का और खलने कूदने करने का हक़ है। और २९वें जिन के मुताबिक़ हर मनुष्य के लिय उसकी पढ़ाई उसका मानवीय अधिकार है। CRY (child rights and you) हर शेहेर में इस बारे में जागरूकता बडंाना चाहती है। Care जो बचंचो को अपने अधिकार के बारो में शिक्षा देती हैं ताकी यह जुर्म रोक पाय। Ride, जो दशयम भारत मैं है, जो बाल श्रम के ख़िलाफ़ चित्र बना कर दीवारों पर चिपकाती है। हक़ भी इन बच्चों को अपने हक़ बताती है, और उनके अधिकार दिलती है।

United Nations ने भी इसके ख़िलाफ़ बहुत कुछ करा है। उन्होंने हुमन साइट्स डेकलरेशन में लिखा है, जीस में २४वें जिन में लिखा है कि हर इसांन को काम करने का, आराम करने का और खलने कूदने करने का हक़ है।

७०% बाल श्रमिक खेती- बाड़ी कै काम करते है, इस काम में उनके बात भी कट सकते है। ९% भोजनालयों और घाटों में श्रम करते है। ८% कारख़ानों में काम करते है, जाहा वह चिड़िया, पटखे, अगरबत्तियाँ और बिड़ी जैसे समान भी बनाते है, जागा तेज़ाब के उपयोग से उनकी ऊँगलियों भी गल जाती है। ६% घरों मैं नोकर का काम करते है। ४% रेलगाड़ी या बसों में श्रम करते है, इनसे गिरके इन जान भी चली जाती है। २% निर्माण का काम करते है यह देहाती के मज़दूर बन कर ईंटें सर पर धोते है। १% खनन से जुड़े कार्य करते से ख़ास करके कोयलों के साथ जो उनके फेफड़े ख़राब कर देता है।

१५% बाल श्रमिक उत्तर प्रदेश से होते है, ११% अंदर प्रदेश से, राजस्थान से १०% बाल श्रमिक आते है। बिहार और माधय प्रदेश से ९% बाल श्रमिक आते हैं, वेस्ट बेंगोल से ७% बाल श्रमिक होते है। कर्न्ातका और माहाराशत्रा ६% बाल श्रमिकों के प्रदेश है। गुजरात, तमिल नाढु, झारखंण्ड, उड़ीसा, चंडिगण और आसान से ३% बच्चें आते है और २% हरियाणा सें।

इस समस्या को सुलझाने के कइ तरीक़े हैं। मुफ़्त शिक्षा के साथ साथ २ वक़त का भोजन, विध्याले की वर्दी, और कक्षा की पुस्तकें भी मुफ़्त में दीये जाये,तो अभिभावक लालच के बच्चों को विध्याले भी भेजेंगे। इसके अधिक कर का प्रणाली बेहेतर करने से, ग़रीबी कम हो सकती है... जिससे बाल श्रम भी कम हो जायेगा। नियोंकता को भी या बच्चों की जगहा उनके माता- पिता को काम देना चाहिये, या बच्चों को अपने हक़ देने चाहिये। सरकार को यह भी ध्यान मैं रखना चाहिये के हर बच्चा कम-से-कम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करे और हर अपराधी का मुद्दा दर्ज किया जाये।

निबंधकार - अयुर्शी खत्री छात्र IABBV हिन्दी स्कूल, सिडनी ऑस्ट्रेलिया शुभ कामनाओं सहित

माला मेहता, OAM, मानद समन्वयक संस्थापक/शिक्षक, IABBV हिन्दी स्कूल, सिडनी ऑस्ट्रेलिया

मिटने का अधिकार

वे मुस्काते फूल, नहीं
जिनको आता है मुर्झाना,
वे तारों के दीप, नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना

वे सूने से नयन,नहीं
जिनमें बनते आंसू मोती,
वह प्राणों की सेज,नही
जिसमें बेसुध पीड़ा, सोती

वे नीलम के मेघ, नहीं
जिनको है घुल जाने की चाह
वह अनन्त रितुराज,नहीं
जिसने देखी जाने की राह
ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं,नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद
क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार
रहने दो हे देव अरे
यह मेरे मिटने क अधिकार

महादेवी वर्मा विरहपूर्ण गीतों की गायिका, आधुनिक युग की मीरा कही जाती हैं। "पद्मश्री" एवं "भारतीय ज्ञानपीठ" की उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा वेदनाभाव की कवियित्री हैं। इनके काव्य का आधार वास्तव में प्रेमात्मक रहस्यवाद ही है। महादेवी वर्मा ने अपने अज्ञात प्रियतम को स्वरूपितकर, उससे अपना सम्बन्ध जोड़ा और अपने रहस्यवाद की अभिव्यंजना को चित्रात्मक भाषा में व्यक्त किया। उनके काव्य में शुद्ध छायावादी प्रकृति-दर्शन मिलता है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। साभार: www.http://hi.bharatdiscovery.org चित्र: http://kv1madurailibrary.wordpress.com

अलग्योझा

भोला महतो ने पहली स्त्री के मर जाने बाद दूसरी सगाई की, तो उसके लड़के रग्घू के लिए बुरे दिन आ गए। रग्घू की उम्र उस समय केवल दस वर्ष की थी। चैने से गाँव में गुल्ली-डंडा खेलता फिरता था। माँ के आते ही चक्की में जुतना पड़ा। पन्ना रुपवती स्त्री थी और रुप और गर्व में चोली-दामन का नाता है। वह अपने हाथों से कोई काम न करती। गोबर रग्घू निकालता, बैलों को सानी रग्घू देता। रग्घू ही जूठे बरतन माँजता। भोला की आँखें कुछ ऐसी फिरीं कि उसे रग्घू में सब बुराइयाँ-ही-बुराइयाँ नजर आतीं। पन्ना की बातों को वह प्राचीन मर्यादानुसार आँखें बंद करके मान लेता था। रग्घू की शिकायतों की जरा परवाह न करता। नतीजा यह हुआ कि रग्घू ने शिकायत करना ही छोड़ दिया। किसके सामने रोए? बाप ही नहीं, सारा गाँव उसका दुश्मन था। बड़ा जिद्दी लड़का है, पन्ना को तो कुछ समझता ही नहीं: बेचारी उसका दुलार करती है, खिलाती-पिलाती हैं यह उसी का फल है। दूसरी औरत होती, तो निबाह न होता। वह तो कहो, पन्ना इतनी सीधी-सादी है कि निबाह होता जाता है। सबल की शिकायतें सब सुनते हैं, निर्बल की फरियाद भी कोई नहीं सुनता! रग्घू का हृदय माँ की ओर से दिन-दिन फटता जाता था। यहां तक कि आठ साल गुजर गए और एक दिन भोला के नाम भी मृत्यु का सन्देश आ पहुँचा।

वह अपने हाथों से कोई काम न करती। गोबर रग्घू निकालता, बैलों को सानी रग्घू देता।

पन्ना के चार बच्चे थे-तीन बेटे और एक बेटी। इतना बड़ खर्च और कमानेवाला कोई नहीं। रग्घू अब क्यों बात पूछने लगा? यह मानी हुई बात थी। अपनी स्त्री लाएगा और अलग रहेगा। स्त्री आकर और भी आग लगाएगी। पन्ना को चारों ओर अंधेरा ही दिखाई देता था: पर कुछ भी हो, वह रग्घू की आसरैत बनकर घर में रहेगी। जिस घर में उसने राज किया, उसमें अब लौंडी न बनेगी। जिस लौंडे को अपना गुलाम समझा, उसका मुंह न ताकेगी। वह सुन्दर थीं, अवस्था अभी कुछ ऐसी ज्यादा न थी। जवानी अपनी पूरी बहार पर थी। क्या वह कोई दूसरा घर नहीं कर सकती? यहीं न होगा, लोग हँसेंगे। बला से! उसकी बिरादरी में क्या ऐसा होता नहीं? ब्राह्मण, ठाकुर थोड़ी ही थी कि नाक कट जायगी। यह तो उन्ही ऊँची जातों में होता है कि घर में चाहे जो कुछ करो, बाहर परदा ढका रहे। वह तो संसार को दिखाकर दूसरा घर कर सकती है, फिर वह रग्घू की दबैल बनकर क्यों रहे?

भोला को मरे एक महीना गुजर चुका था। संध्या हो गई थी। पन्ना इसी चिन्ता में पड़ हुई थी कि सहसा उसे ख्याल आया, लड़के घर में नहीं हैं। यह बैलों के लौटने की बेला है, कहीं कोई लड़का उनके नीचे न आ जाए। अब द्वार पर कौन है, जो उनकी देखभाल करेगा? रग्घू को मेरे लड़के फूटी आँखों नहीं भाते। कभी हँसकर नहीं बोलता। घर से बाहर निकली, तो देखा, रग्घू सामने झोपड़े में बैठा ऊख की गँडेरिया बना रहा है, लड़के उसे घेरे खड़े हैं और छोटी लड़की उसकी गर्दन में हाथ डाले उसकी पीठ पर सवार होने की चेष्टा कर रही है। पन्ना को अपनी आँखों पर विश्वास न आया। आज तो यह नई बात है। शायद दुनिया को दिखाता है कि मैं अपने भाइयों को कितना चाहता हूँ और मन में छुरी रखी हुई है। घात मिले तो जान ही ले ले! काला साँप है, काला साँप! कठोर स्वर में बोली-तुम सबके सब वहाँ क्या करते हो? घर में आओ, साँझ की बेला है, गोरु आते होंगे।

रग्घू ने विनीत नेत्रों से देखकर कहा—मैं तो हूं ही काकी, डर किस बात का है?

बड़ा लड़का केदार बोला-काकी, रग्घू दादा ने हमारे लिए दो गाड़ियाँ बना दी हैं। यह देख, एक पर हम और खुन्नू बैठेंगे, दूसरी पर लछमन और झुनियाँ। दादा दोनों गाड़ियाँ खींचेंगे।

यह कहकर वह एक कोने से दो छोटी-छोटी गाड़ियाँ निकाल लाया। चार-चार पहिए लगे थे। बैठने के लिए तख्ते और रोक के लिए दोनों तरफ बाजू थे।

पन्ना ने आश्चर्य से पूछा-ये गाड़ियाँ किसने बनाई?

केदार ने चिढ़कर कहा-रग्घू दादा ने बनाई हैं, और किसने! भगत के घर से बसूला और रुखानी माँग लाए और चटपट बना दीं। खूब दौड़ती हैं काकी! बैठ खुन्नू मैं खींचूँ।

खुन्नू गाड़ी में बैठ गया। केदार खींचने लगा। चर-चर शोर हुआ मानो गाड़ी भी इस खेल में लड़कों के साथ शरीक है। लछमन ने दूसरी गाड़ी में बैठकर कहा-दादा, खींचो।

रग्घू ने झुनियाँ को भी गाड़ी में बिठा दिया और गाड़ी खींचता हुआ दौड़ा। तीनों लड़के तालियाँ बजाने लगे। पन्ना चकित नेत्रों से यह दृश्य देख रही थी और सोच रही थी कि य वही रग्घू है या कोई और।

थोड़ी देर के बाद दोनों गाड़ियाँ लौटीं: लड़के घर में जाकर इस यानयात्रा के अनुभव बयान करने लगे। कितने खुश थे सब, मानों हवाई जहाज पर बैठ आये हों।

खुन्नू ने कहा-काकी सब पेड़ दौड़ रहे थे।

लछमन-और बछियाँ कैसी भागीं, सबकी सब दौड़ीं!

केदार-काकी, रग्घू दादा दोनों गाड़ियाँ एक साथ खींच ले जाते हैं।

झुनियाँ सबसे छोटी थी। उसकी व्यंजना-शक्ति उछल-कूद और नेत्रों तक परिमित थी-तालियाँ बजा-बजाकर नाच रही थी।

संध्या हो गई थी। पन्ना इसी चिन्ता में पड़ हुई थी कि सहसा उसे ख्याल आया, लड़के घर में नहीं हैं।

खुन्नू-अब हमारे घर गाय भी आ जाएगी काकी! रग्घू दादा ने गिरधारी से कहा है कि हमें एक गाय ला दो। गिरधारी बोला, कल लाऊँगा।

केदार-तीन सेर दूध देती है काकी! खूब दूध पीएँगे।

चर-चर शोर हुआ मानो गाड़ी भी इस खेल में लड़कों के साथ शरीक है।
लछमन ने दूसरी गाड़ी में बैठकर कहा-दादा, खींचो।

इतने में रग्घू भी अंदर आ गया। पन्ना ने अवहेलना की दृष्टि से देखकर पूछा-क्यों रग्घू तुमने गिरधारी से कोई गाय माँगी है?

रग्घू ने क्षमा-प्रार्थना के भाव से कहा-हाँ, माँगी तो है, कल लाएगा।

पन्ना-रुपये किसके घर से आएँगे, यह भी सोचा है?

रग्घू-सब सोच लिया है काकी! मेरी यह मुहर नहीं है। इसके पच्चीस रुपये मिल रहे हैं, पाँच रुपये बछिया के मुजा दे दूँगा! बस, गाय अपनी हो जाएगी।

पन्ना सन्नाटे में आ गई। अब उसका अविश्वासी मन भी रग्घू के प्रेम और सज्जनता को अस्वीकार न कर सका। बोली-मुहर को क्यों बेचे देते हो? गाय की अभी कौन जल्दी है? हाथ में पैसे हो जाएँ, तो ले लेना। सूना-सूना गला अच्छा न लगेगा। इतने दिनों गाय नहीं रही, तो क्या लड़के नहीं जिए?

रग्घू दार्शनिक भाव से बोला-बच्चों के खाने-पीने के यही दिन हैं काकी! इस उम्र में न खाया, तो फिर क्या खाएँगे। मुहर पहनना मुझे अच्छा भी नही मालूम होता। लोग समझते होंगे कि बाप तो गया। इसे मुहर पहनने की सूझी है।

भोला महतो गाय की चिंता ही में चल बसे। न रुपये आए और न गाय मिली। मजबूर थे। रग्घू ने यह समस्या कितनी सुगमता से हल कर दी। आज जीवन में पहली बार पन्ना को रग्घू पर विश्वास आया, बोली-जब गहना ही बेचना है, तो अपनी मुहर क्यों बेचोगे? मेरी हँसुली ले लेना।

रग्घू-नहीं काकी! वह तुम्हारे गले में बहुत अच्छी लगती है। मर्दो को क्या, मुहर पहनें या न पहनें।

पन्ना-चल, मैं बूढ़ी हुई। अब हँसुली पहनकर क्या करना है। तू अभी लड़का है, तेरा गला अच्छा न लगेगा?

रग्घू मुस्कराकर बोला—तुम अभी से कैसे बूढ़ी हो गई? गाँव में है कौन तुम्हारे बराबर?

रग्घू की सरल आलोचना ने पन्ना को लज्जित कर दिया। उसके रुखे-मुरझाए मुख पर प्रसन्नता की लाली दौड़ गई।

पाँच साल गुजर गए। रग्घू का-सा मेहनती, ईमानदार, बात का धनी दूसरा किसान गाँव में न था। पन्ना की इच्छा के बिना कोई काम न करता। उसकी उम्र अब 23 साल की हो गई थी। पन्ना बार-बार कहती, भइया, बहू को बिदा करा लाओ। कब तक नैह में पड़ी रहेगी? सब लोग मुझी को बदनाम करते हैं कि यही बहू को नहीं आने देती: मगर रग्घू टाल देता था। कहता कि अभी जल्दी क्या है? उसे अपनी स्त्री के रंग-ढंग का कुछ परिचय दूसरों से मिल चुका था। ऐसी औरत को घर में लाकर वह अपनी शाँति में बाधा नहीं डालना चाहता था। *(जारी ...)*

साभार: http://www.hindisamay.com/

मीरां बाई पदावली

शबरी प्रसंग

अब तो निभायाँ सरेगी, बांह गहेकी लाज।
समरथ सरण तुम्हारी सइयां, सरब सुधारण काज॥

भवसागर संसार अपरबल, जामें तुम हो झयाज।
निरधारां आधार जगत गुरु तुम बिन होय अकाज॥

जुग जुग भीर हरी भगतन की, दीनी मोच्छ समाज।
मीरां सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज॥

साभार: www.hindisamay.com/

काम टालना

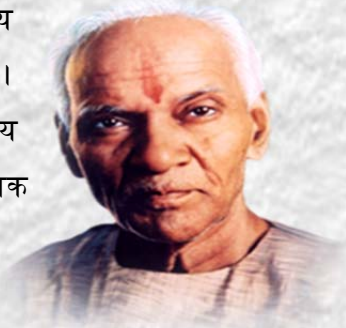

अनेकों मनुष्य द्विधा में पड़े रहते हैं और अपने जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों तक का निर्णय नहीं कर पाते और उन सारी गुत्थियों को यों ही उलझा छोड़कर मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। मृत्युशय्या पर पड़े हुए रावण से जब लक्ष्मण जी शिक्षा लेने गये, तो उसने बताया – "मनुष्य जीवन को असफल बनाने वाले ढुलमुल स्वभाव से बुरी बात और कोई नहीं है। मैं स्वर्ग तक सीढ़ियाँ बनाना चाहता था। समुद्र को मीठा करना, सोने की लंका को सुगंधित भी करना और मृत्यु को पूरी तरह वश में करना, ये सब बातें मैं कर सकता था, पर कल पर टालता रहा। आज मर रहा हूँ पर वह 'कल' अभी तक न आ सका।"असंख्य मनुष्य के झगड़ों को सुलझाते रहते हैं, पर अपनी निज की समस्याओं को यों ही पड़ी छोड़ जाते हैं। बुद्धिमानों की अपेक्षा तो वह मूर्ख अच्छे, जो समय का मूल्य एवं महत्त्व समझते हुए उत्साह एवं सतर्कता के साथ अपने कार्यक्रम की पूर्ति करते हैं। निश्चय ही वे बुद्धिमान् हैं या आगे चलकर बन जायेंगे, जिन्होंने आलस्य का परित्याग कर दिया है और काम की चुस्ती को अपना लिया है।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

इस पार उस पार

इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

यह चाँद उदित होकर नभ में कुछ ताप मिटाता जीवन का,
लहरालहरा यह शाखाएँ कुछ शोक भुला देती मन का,
कल मुर्झानेवाली कलियाँ हँसकर कहती हैं मगन रहो,
बुलबुल तरु की फुनगी पर से संदेश सुनाती यौवन का,
तुम देकर मदिरा के प्याले मेरा मन बहला देती हो,
उस पार मुझे बहलाने का उपचार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

जग में रस की नदियाँ बहती, रसना दो बूंदें पाती है,
जीवन की झिलमिलसी झाँकी नयनों के आगे आती है,
स्वरतालमयी वीणा बजती, मिलती है बस झंकार मुझे,
मेरे सुमनों की गंध कहीं यह वायु उड़ा ले जाती है!
ऐसा सुनता, उस पार, प्रिये, ये साधन भी छिन जाएँगे,
तब मानव की चेतनता का आधार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

प्याला है पर पी पाएँगे, है ज्ञात नहीं इतना हमको,
इस पार नियति ने भेजा है, असमर्थबना कितना हमको,
कहने वाले, पर कहते है, हम कर्मों में स्वाधीन सदा,
करने वालों की परवशता है ज्ञात किसे, जितनी हमको?
कह तो सकते हैं, कहकर ही कुछ दिल हलका कर लेते हैं,
उस पार अभागे मानव का अधिकार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

कुछ भी न किया था जब उसका, उसने पथ में काँटे बोये,
वे भार दिए धर कंधों पर, जो रोरोकर हमने ढोए,
महलों के सपनों के भीतर जर्जर खँडहर का सत्य भरा!

उर में एसी हलचल भर दी, दो रात न हम सुख से सोए!
अब तो हम अपने जीवन भर उस क्रूरकठिन को कोस चुके,
उस पार नियति का मानव से व्यवहार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

संसृति के जीवन में, सुभगे! ऐसी भी घड़ियाँ आऐंगी,
जब दिनकर की तमहर किरणे तम के अन्दर छिप जाएँगी,
जब निज प्रियतम का शव रजनी तम की चादर से ढक देगी,
तब रविशशिपोषित यह पृथिवी कितने दिन खैर मनाएगी!
जब इस लंबेचौड़े जग का अस्तित्व न रहने पाएगा,
तब तेरा मेरा नन्हासा संसार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

ऐसा चिर पतझड़ आएगा, कोयल न कुहुक फिर पाएगी,
बुलबुल न अंधेरे में गागा जीवन की ज्योति जगाएगी,
अगणित मृदुनव पल्लव के स्वर 'भरभर' न सुने जाएँगे,
अलिअवली कलिदल पर गुंजन करने के हेतु न आएगी,
जब इतनी रसमय ध्वनियों का अवसान, प्रिय हो जाएगा,
तब शुष्क हमारे कंठों का उद्गार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

सुन काल प्रबल का गुरु गर्जन निर्झरिणी भूलेगी नर्तन,
निर्झर भूलेगा निज 'टलमल', सरिता अपना 'कलकल' गायन,
वह गायकनायक सिन्धु कहीं, चुप हो छिप जाना चाहेगा!
मुँह खोल खड़े रह जाएँगे गंधर्व, अप्सरा, किन्नरगण!
संगीत सजीव हुआ जिनमें, जब मौन वही हो जाएँगे,
तब, प्राण, तुम्हारी तंत्री का, जड़ तार न जाने क्या होगा!
इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

उतरे इन आखों के आगे जो हार चमेली ने पहने,
वह छीन रहा देखो माली, सुकुमार लताओं के गहने,
दो दिन में खींची जाएगी ऊषा की साड़ी सिन्दूरी

पट इन्द्रधनुष का सतरंगा पाएगा कितने दिन रहने!
जब मूर्तिमती सत्ताओं की शोभाशुषमा लुट जाएगी,
तब कवि के कल्पित स्वप्नों का श्रृंगार न जाने क्या होगा!
मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!
दृग देख जहाँ तक पाते हैं, तम का सागर लहराता है,
भी उस पार खड़ा कोई हम सब को खींच बुलाता है!
चला तुम आओगी, कल, परसों, सब संगीसाथी,
रोतीधोती रहती, जिसको जाना है, जाता है।
तो होता मन डगडग मग, तट पर ही के हलकोरों से!
एकाकी पहुँचूँगा, मँझधार न जाने क्या होगा!
प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा!

इस पार, प्रिये
फिर
मैं आज
दुनिया
मेरा
जब मैं
इस पार,

हरिवंश राय बच्चन (27 नवंबर, 1907 - 18 जनवरी, 2003) हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है। 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' उनके प्रमुख संग्रह हैं। हरिवंश राय बच्चन को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', सरस्वती सम्मान एवं भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। *साभार:* कविता कोश, http://www.kavitakosh.org, चित्र: http://gadyakosh.org

संत कबीरदास दोहावली

पतिवृता मैली, काली कुचल कुरूप ।
पतिवृता के रूप पर, वारो कोटि सरूप ॥

बैध मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार ।
एक कबीरा ना मुआ, जेहि के राम अधार ॥

हर चाले तो मानव, बेहद चले सो साध ।
हद बेहद दोनों तजे, ताको भता अगाध ॥

राम रहे बन भीतरे गुरु की पूजा ना आस ।
रहे कबीर पाखण्ड सब, झूठे सदा निराश ॥

जाके जिव्या बन्धन नहीं, ह्रदय में नहीं साँच ।
वाके संग न लागिये, खाले वटिया काँच ॥

तीरथ गये ते एक फल, सन्त मिले फल चार ।
सतगुरु मिले अनेक फल, कहें कबीर विचार ॥

सुमरण से मन लाइए, जैसे पानी बिन मीन ।
प्राण तजे बिन बिछड़े, सन्त कबीर कह दीन ॥

समझाये समझे नहीं, पर के साथ बिकाय ।
मैं खींचत हूँ आपके, तू चला जमपुर जाए ॥

हंसा मोती विण्न्या, कुञ्चन थार भराय ।
जो जन मार्ग न जाने, सो तिस कहा कराय ॥

कबीर (1398-1518) कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में प्रसिद्ध मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। इनका परिचय, प्राय: इनके जीवनकाल से ही, इन्हें सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है तथा इनके नाम पर कबीरपंथ नामक संप्रदाय भी प्रचलित है। संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू-भक्तों तथा मुसलमान फ़कीरों का सत्संग किया। तीन भागों; रमैनी, सबद और साखी में विस्तृत कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है।

साभार: *www.hindisahityadarpan.in, http://www.kavitakosh.org,* चित्र : *www.hindu-blog.com*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब से

॥ जपु ॥

कवणु

सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥४॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥

Copyright 2010 Catnip Studios Katherine Sereda. All rights reserved

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥

कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥

अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥

अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥

अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥

ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥

बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥

Copyright 2010 Catnipstudios Katherine Sewahl All rights reserved

हिन्दी दिवस ही क्यों?

हिन्दी भाषियों और हिन्दी प्रेमियों आप हिन्दी दिवस क्यों मनाते हैं ? वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस मना लिया तो उससे क्या, हिन्दी दिवस का उद्देश्य पूरा हो गया, हिन्दी के प्रति हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया । हिन्दी दिवस मनाना केवल यात्रा का प्रथम पढाव है उसे अंत समझने की भूल ना करें । मैं हिन्दी दिवस मनाने की आलोचना नहीं कर रहा हूँ ।

प्यारे भाइयों और बहनों वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस मना लेने से आप हिन्दी प्रेमी नहीं कहला सकते । क्या एक दिन मातृ दिवस मना लेने से माँ के प्यार के कर्ज से मुक्ति मिल जायेगी ? एक दिन योग या व्यायाम कर लेने से आपका रक्त चाप सामान्य नहीं हो जायेगा । एक दिन दौड़ लगा लेने से आप ओलिंपिक में गोल्ड मैडल नहीं जीत पाएंगे । इसी तरह एक दिन हिन्दी दिवस मना लेने मातृभाषा का ऋण नहीं उतर पायेगा ।

हिन्दी तो आपको भरसक प्यार करती है। क्या आप भी हिंदी को उतना ही प्यार करते है । कैसे पता चला कि हिन्दी हमें प्यार करती है । "हिन्दी हमारी मातृभाषा है मात्र भाषा नही "[1]। माता की भाषा है कोई परायी भाषा नहीं है। माता ने पहला प्यार का शब्द हिन्दी में कहा था, माता ने पहली लोरी हिन्दी में सुनायी थी |

हिन्दी में माता का प्यार भरा है। माता के प्यार से तो किसी की तुलना नहीं की जा सकती । आप अपनी भाषा को कितना प्यार करते है ? यदि करते हैं तो केवल एक हिन्दी दिवस के ही दिन हिन्दी का गुण गान मत करिये | आप हिन्दी प्रेमी है तो हिन्दी में बोलिए, हिन्दी पढ़िए और हिन्दी में लिखिए ।

हमारे देश भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी क्यों नहीं है जबकि वह तीन चौथाई भारतीयों द्वारा समझी जाती है । उसके कई प्रतीत होते हैं: 1. व्यापार और शिक्षण क्षेत्र में हिन्दी का उपयोग न होना 2. अंग्रेजी बोलने वाले को नौकरी में प्राथमिकता । 3. समाज का अंग्रेजी के प्रति द्रष्टिकोण और अंततः सरकार में इस विषय के प्रति दृढ संकल्प की कमी ।

आज भारत में माता पिता अपने बच्चो को अल्प आयु से अंग्रेजी सिखाने में गर्व अनुभव करते हैं । भारत में अंग्रेजी का चलन[2] बढ़ता ही जा रहा है ।

अशोक कुमार शेरी[3] लिखते है कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है | भारत में और भी समृद्ध भाषाए है पर हिन्दी सबसे व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगो द्वारा समझी जाती है | भावना दामले जी[4] का भी मत है कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है |

डा. वेदप्रताप वैदिक[5] में बड़े उपहासात्मक तरीके से लिखते है कि भाषाई द्रष्टि से हम अब भी गुलाम है। अंग्रेजी का इतना रुतबा और किसी ब्रिटेन के गुलाम देश में नहीं होगा । जब हमारे नेता अंग्रेजी में भाषण देते हैं तो 95% जनता को गूंगा बहरा बना देते हैं ।

डा. वेदप्रताप वैदिक[6] के ही अनुसार हिन्दी का राष्ट्र भाषा न होना इसका कारण हिन्दी में कमी होना नहीं है। कमी हिन्दी भाषियों में है। हिन्दी और संस्कृत मिलकर संपूर्ण कंप्यूटर के विश्व में राज कर सकती है । रेखा राजवंशीजी[7] अपने ब्लॉग में लिखती है कि हिन्दी के शब्द भण्डार में हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से अधिक है ।

इसी विषय पर मार्क टली[8] का निबंध उल्लेखनीय है । मार्क दिल्ली में जहां रहते थे वहां अंग्रेजी पुस्तको की कई दुकाने थी परन्तु हिन्दी पुस्तकों की दुकान कठिनाई से ही मिलती थी । भारत में अंग्रेजी 5% से भी कम लोगो समझी जाती है । कुछ तो

कहते है कि अंग्रेजी जानने वालो का प्रतिशत 2% भी नहीं है । फिर भी अंग्रेजी समाचार पत्रों की विज्ञापन दरें हिन्दी समाचार पत्रों की उपेक्षा कम है। दो प्रतिशत लोग अन्य सभी पर अपना प्रभुत्व बनाए बैठे हैं। मार्क को यह बात बहुत अखरती है कि भारतीय भाषाओ पर अंग्रेजी का विराजमान है। उनका यकीन है कि भारतीय भाषाओं के बिना भारतीय संस्कृति ज़िंदा नहीं रह सकती। आप बंगाली, तमिल या गुजराती होने पर गर्व कर सकते है तो हिन्दी पर क्यों नहीं ? यहाँ पर अन्य भारतीय भाषाओ के प्रति मेरी कोई दुर्भावना नहीं है। मैं नत मस्तक हूँ उनके सामने जो दो या दो से अधिक भारतीय भाषायें बोलते और समझते हैं।

मै इस विषय पर और अधिक बात न करते हुये ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी की क्या स्थिती है वह आपको बताना चाहूंगा।

सबसे पहले मैं आपको चौकाने वाले आंकड़े बताने वाला हूँ।

'CESE Bulletin ISSUE 1'[9] के अनुसार 2012 में न्यू साउथ वेल्स की पाठशालाओ में अंग्रेजी के अतिरिक्त दूसरी भाषा बोलने वाले छात्रों की संख्या और पाठशालाओ की संख्या[10] (2012 Community Languages allocations by language) जहां वह भाषा पढायी जाती है के आंकड़े नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ। कुछ ही भाषाओं के आंकड़े दे रहा हूँ:

भाषा	भाषा बोलने/समझने वालों की संख्या	विद्यालय संख्या*
ग्रीक	9157	20
हिंदी	**9146**	**1**
कोरियन	7130	7
स्पेनिश	6654	6#
इटालियन	5908	28
बंगाली	2967	3

*विद्यालय संख्या जहां यह भाषा पढ़ाई जाती है।

#एक अन्य लिंक[11] से आपको पता चला कि स्पेनिश 18 पाठशालाओ में पढायी जाती है।

इस तुलना से पता चलेगा कि हम हिन्दी भाषी कितने पानी में हैं। हिन्दी समझने वालों की संख्या इटालियन बोलने वालो से 50% अधिक है परन्तु हिन्दी केवल एक ही पाठशाला में पढ़ाई जाती है जबकि इटालियन 28 विद्यालयों में पढ़ाई जाती है। इसके क्या कारण हो सकते हैं? मेरा अनुमान है कि इटालियन समुदाय का सरकार पर प्रभाव, उनकी एकजुटता और इटली का आर्थिक महत्व आदि हैं।

आज ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी बोलने और समझने वालो की संख्या इटालियन बोलने वालो से अधिक है। परन्तु हिंदी को अधिक पाठशालाओ में आरंभ करवाने के लिए भारतीय समुदाय कुछ विशेष करता दिखाई नहीं पढ़ रहा है।

एक और बात ध्यान देने योग्य है हिंदी बोलने/समझने वालो की संख्या (9146) जो ऊपर दी गयी है उसमें गुजराती (1607), बंगाली (2967), पंजाबी (2775) , तेलुगु (1016) , तमिल (3712) और उर्दू (3321) बोलने वालो की संख्या जोड़ी नहीं गयी है । इन भाषाओ को बोलने वाले अधिकांशतः हिंदी समझते होंगे । यहाँ ध्यान देने योग्य बात है

कि बंगाली बोलने वाले हिन्दी बोलने वालों की संख्या से बहुत कम हैं परन्तु बंगाली तीन विद्यालयों में पढाई जाती है । मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि दूसरी भारतीय भाषायें नहीं पढ़ानी चाहिये बल्कि हिन्दी भाषियों को बंगाली भाइयों से सबक लेना चाहिये |

ऊपर के आंकड़े कुछ पुराने हैं। कोरियन अब वेस्ट राइड में भी पढायी जाती है | वेस्ट राइड में कोरियन प्रारंभ होने का क्या कारण है ? कोरियाई समुदाय ने विद्यालय से संपर्क किया और कोरियाई दूतावास से कोरियन शिक्षक के वेतन का प्रबंध किया।

आप सोच रहे होंगे कि हम और आप क्या कर सकते हैं। क्या हम भी भारतीय दूतावास से अपेक्षा करें। यदि प्रबंध हो जाए तो बहुत ही अच्छा है। परन्तु हमें कोई और उपाय सोचना होगा। हम भारतीयों को भी एकजुट होकर कुछ करने का संकल्प लेना होगा।

डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन से बात करने से कोई भाषा आरंभ करवाने का क्राइटेरिया पता चला जो इस प्रकार है –

Criteria

- the language must be spoken by the local school community
- the school must demonstrate community and staff support for the program
- the school must commit itself to a minimum of 2 hours language teaching per week
- the school must have a dedicated classroom to enable the teacher to develop a language learning environment .

For information about organising and implementing a Community Languages program at your primary school, download the following document[12] Community Languages Program K-6 Guidelines

आप पहले दो बिन्दुओं पर ध्यान दे | इनसे स्पष्ट पता चलता है कि समुदाय की बहुतायता आवश्यक है और समुदाय को यह दिखाना होगा और साबित करना होगा कि वे अपने बच्चों को भाषा सिखाने के लिए तत्पर हैं | अभिभावकों को जाकर प्राचार्य/प्राचार्या से मिलना होगा, लिखकर देना होगा |

समय आ गया है हम अपनी मातृभाषा पर गर्व करें और उसे उचित स्थान दिलाने की पूरी चेष्टा करें | अपने बच्चों को अपनी भाषा सिखाने का कर्त्तव्य आपका है | बिना भाषा समझे अगली पीढ़ी के बच्चे संस्कृति से पूरी तरह नही जुड़ पायेंगे | आज ही एक तमिल भाषी अभिभावक से बात हो रही थी, जो मुझसे बहुत अच्छी तरह हिंदी में बात कर रहे थे, उन्हें उनके डॉक्टर ने बहुत अच्छी सलाह दी थी | उन्हें डॉक्टर ने बताया था कि बच्चा वह भाषा सीखता जो घर में बोली जाती है, माता पिता और बच्चे आपस में बोलते हैं | इसलिए भाइयों और बहनों आप घर में, मित्रों के साथ और सम्बन्धियों के साथ अपनी भाषा में बातें करें |

मैं कुछ करने की आवश्यकता का अहसास दिलाकर अपनी बात को यही विराम देता हूँ। - कमलेश चौधरी

संदर्भ अनुरोध पर उपलब्ध हैं।

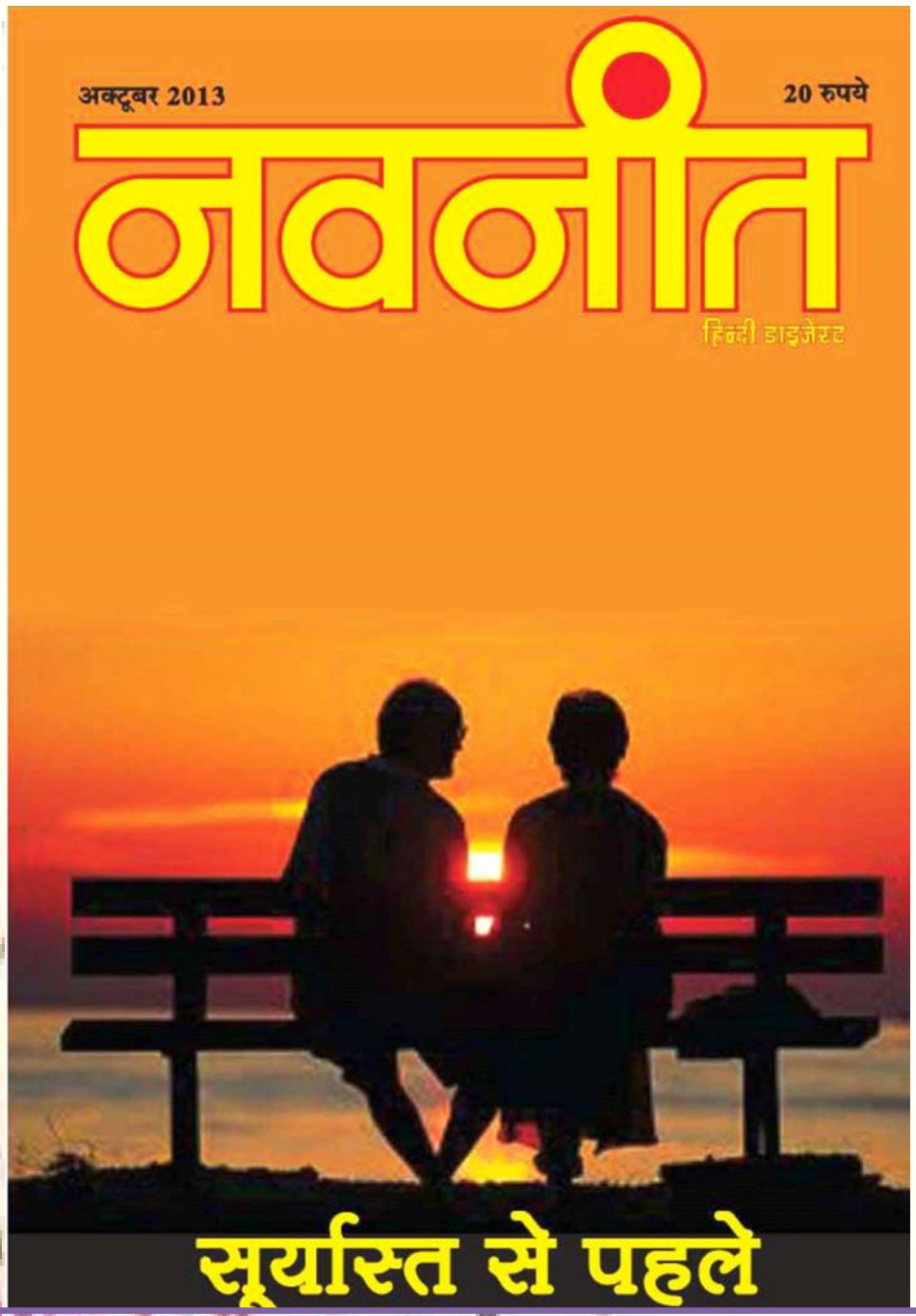

पी. वी. शंकरनकुट्टी द्वारा भारतीय विद्या भवन, के. एम्. मुंशी मार्ग, मुंबई – 400 007 के लिए पर्काशित
तथा सिद्धि प्रिंटर्स, 13/14, भाभा बिल्डिंग, खेतवाडी, 13 लेन, मुंबई – 400 004 में मुद्रित।
ले-आउट एवं डिज़ाइनिंग : समीर पारेख - क्रिएटिव पेज सेटर्स, गोरेगांव, मुंबई – 104, फ़ोन: 98690 08907
संपादक : विश्वनाथ सचदेव

नवनीत अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। **www.navneet.bhavans.info** और साथ ही इन्टरनेट से नवनीत का चंदा भरने के लिए लॉगऑन करें
http://www.bhavans.info/periodical/pay_online.asp
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे
भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000, जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001, फोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005,
ईमेल: **info@bhavanaustralia.org**
नवनीत समर्पण गुजराती में भी उपलब्ध

प्रभु निवास

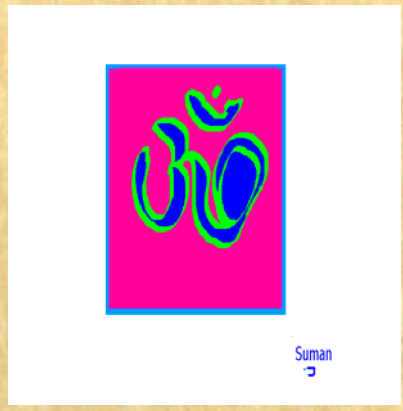

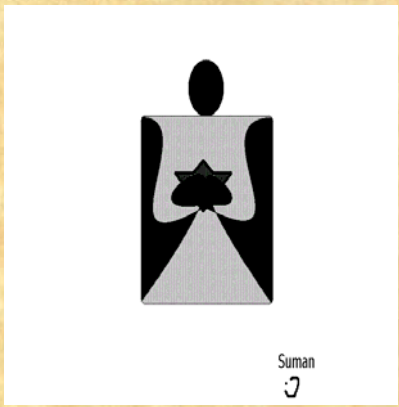

दरख्तों में तुझको ढूँढा
तुझे वहां देख न पाया
कलियों में जा के खोजा
तेरा वास कहीं न पाया

मंदिरों में जाके खोजा
तेरी मूर्ति को ही पाया
गुरूद्वारों में भी झाँका
गुरु ग्रंथसाहिब को पाया

गिरजाघरों में भटका
वहां भी मूर्ति को पाया
मास्जिदों में भी झाँका
नमाज़ का पाठ ही पाया

महलों में जाके देखा
ऐशो-आराम को पाया
झोपिड़यों में भी झाँका
गरीबी से पीड़ितों को पाया

इतना मुझे बता दे
कि तेरा रूप क्या है
निराकार रूप है तेरा
या साकार है रूप तेरा

सारे जहाँ में ढूँढा
तेरा धाम कहीं न पाया
जब दिल में झाँक कर देखा
तो वहां पर तू समाया।

सुमन

सुमन हिन्दी और अंग्रेजी में कविता लिखती हैं और पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में एक ग्राफिक कलाकार हैं।

अमृतसर आ गया है

'कहीं कोई गड़बड़ है,' मेरे पास बैठे दुबले बाबू ने कहा।

कहीं कुछ था, लेकिन क्या था, कोई भी स्पष्ट नहीं जानता था। मैं अनेक दंगे देख चुका था इसलिए वातावरण में होने वाली छोटी-सी तबदील को भी भाँप गया था। भागते व्यक्ति, खटाक से बंद होते दरवाजे, घरों की छतों पर खड़े लोग, चुप्पी और सन्नाटा, सभी दंगों के चिह्न थे।

तभी पिछले दरवाजे की ओर से, जो प्लेटफार्म की ओर न खुल कर दूसरी ओर खुलता था, हल्का-सा शोर हुआ। कोई मुसाफिर अंदर घुसना चाह रहा था।

'कहाँ घुसा आ रहा है, नहीं है जगह! बोल दिया जगह नहीं है,' किसी ने कहा।

'बंद करो जी दरवाजा। यों ही मुँह उठाए घुसे आते हैं।' आवाजें आ रही थीं।

जितनी देर कोई मुसाफिर डिब्बे के बाहर खड़ा अंदर आने की चेष्टा करता रहे, अंदर बैठे मुसाफिर उसका विरोध करते रहते हैं। पर एक बार जैसे-तैसे वह अंदर जा जाए तो विरोध खत्म हो जाता है, और वह मुसाफिर जल्दी ही डिब्बे की दुनिया का निवासी बन जाता है, और अगले स्टेशन पर वही सबसे पहले बाहर खड़े मुसाफिरों पर चिल्लाने लगता है - नहीं है जगह, अगले डिब्बे में जाओ... घुसे आते हैं...

दरवाजे पर शोर बढ़ता जा रहा था। तभी मैले-कुचैले कपड़ों और लटकती मूँछों वाला एक आदमी दरवाजे में से अंदर घुसता दिखाई दिया। चीकट, मैले कपड़े, जरूर कहीं हलवाई की दुकान करता होगा। वह लोगों की शिकायतों-आवाजों की ओर ध्यान दिए बिना दरवाजे की ओर घूम कर बड़ा-सा काले रंग का संदूक अंदर की ओर घसीटने लगा।

'आ जाओ, आ जाओ, तुम भी चढ़ जाओ! वह अपने पीछे किसी से कहे जा रहा था। तभी दरवाजे में एक पतली सूखी-सी औरत नजर आई और उससे पीछे सोलह-सतरह बरस की साँवली-सी एक लड़की अंदर आ गई। लोग अभी भी चिल्लाए जा रहे थे। सरदार जी को कूल्हों के बल उठ कर बैठना पड़ा।'

'बंद करो जी दरवाजा, बिना पूछे चढ़े आते हैं, अपने बाप का घर समझ रखा है। मत घुसने दो जी, क्या करते हो, धकेल दो पीछे...' और लोग भी चिल्ला रहे थे।

वह आदमी अपना सामान अंदर घसीटे जा रहा था और उसकी पत्नी और बेटी संडास के दरवाजे के साथ लग कर खड़े थे।

'और कोई डिब्बा नहीं मिला? औरत जात को भी यहाँ उठा लाया है?'

वह आदमी पसीने से तर था और हाँफता हुआ सामान अंदर घसीटे जा रहा था। संदूक के बाद रस्सियों से बँधी खाट की पाटियाँ अंदर खींचने लगा।

'टिकट है जी मेरे पास, मैं बेटिकट नहीं हूँ।' इस पर डिब्बे में बैठे बहुत-से लोग चुप हो गए, पर बर्थ पर बैठा पठान उचक कर बोला - 'निकल जाओ इदर से, देखता नई ए, इदर जगा नई ए।'

और पठान ने आव देखा न ताव, आगे बढ़ कर ऊपर से ही उस मुसाफिर के लात जमा दी, पर लात उस आदमी को लगने के बजाए उसकी पत्नी के कलेजे में लगी और वहीं 'हाय-हाय' करती बैठ गई।

उस आदमी के पास मुसाफिरों के साथ उलझने के लिए वक्त नहीं था। वह बराबर अपना सामान अंदर घसीटे जा रहा था। पर डिब्बे में मौन छा गया। खाट की पाटियों के बाद बड़ी-बड़ी गठरियाँ आईं। इस पर ऊपर बैठे पठान की सहन-क्षमता चुक गई। 'निकालो इसे, कौन ए ये?' वह चिल्लाया। इस पर दूसरे पठान ने, जो नीचे की सीट पर बैठा था, उस आदमी का संदूक दरवाजे में से नीचे धकेल दिया, जहाँ लाल वर्दीवाला एक कुली खड़ा सामान अंदर पहुँचा रहा था।

उसकी पत्नी के चोट लगने पर कुछ मुसाफिर चुप हो गए थे। केवल कोने में बैठो बुढ़िया करलाए जा रही थी - 'ए नेकबख्तो, बैठने दो। आ जा बेटी, तू मेरे पास आ जा। जैसे-तैसे सफर काट लेंगे। छोड़ो बे जालिमो, बैठने दो।'

अभी आधा सामान ही अंदर आ पाया होगा जब सहसा गाड़ी सरकने लगी।

'छूट गया! सामान छूट गया।' वह आदमी बदहवास-सा हो कर चिल्लाया।

'पिताजी, सामान छूट गया।' संडास के दरवाजे के पास खड़ी लड़की सिर से पाँव तक काँप रही थी और चिल्लाए जा रही थी।

'उतरो, नीचे उतरो,' वह आदमी हड़बड़ा कर चिल्लाया और आगे बढ़ कर खाट की पाटियाँ और गठरियाँ बाहर फेंकते हुए दरवाजे का डंडहरा पकड़ कर नीचे उतर गया। उसके पीछे उसकी व्याकुल बेटी और फिर उसकी पत्नी, कलेजे को दोनों हाथों से दबाए हाय-हाय करती नीचे उतर गई।

'बहुत बुरा किया है तुम लोगों ने, बहुत बुरा किया है।' बुढ़िया ऊँचा-ऊँचा बोल रही थी -'तुम्हारे दिल में दर्द मर गया है। छोटी-सी बच्ची उसके साथ थी। बेरहमो, तुमने बहुत बुरा किया है, धक्के दे कर उतार दिया है।'

गाड़ी सूने प्लेटफार्म को लाँघती आगे बढ़ गई। डिब्बे में व्याकुल-सी चुप्पी छा गई। बुढ़िया ने बोलना बंद कर दिया था। पठानों का विरोध कर पाने की हिम्मत नहीं हुई।

तभी मेरी बगल में बैठे दुबले बाबू ने मेरे बाजू पर हाथ रख कर कहा - 'आग है, देखो आग लगी है।'

गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ कर आगे निकल आई थी और शहर पीछे छूट रहा था। तभी शहर की ओर से उठते धुएँ के बादल और उनमें लपलपाती आग के शोले नजर आने लगे।

'दंगा हुआ है। स्टेशन पर भी लोग भाग रहे थे। कहीं दंगा हुआ है।'

शहर में आग लगी थी। बात डिब्बे-भर के मुसाफिरों को पता चल गई और वे लपक-लपक कर खिड़कियों में से आग का दृश्य देखने लगे।

जब गाड़ी शहर छोड़ कर आगे बढ़ गई तो डिब्बे में सन्नाटा छा गया। मैंने घूम कर डिब्बे के अंदर देखा, दुबले बाबू का चेहरा पीला पड़ गया था और माथे पर पसीने की परत किसी मुर्दे के माथे की तरह चमक रही थी। मुझे लगा, जैसे अपनी-अपनी जगह बैठे सभी मुसाफिरों ने अपने आसपास बैठे लोगों का जायजा ले लिया है। सरदार जी उठ कर मेरी सीट पर आ बैठे। नीचे वाली सीट पर बैठा पठान उठा और अपने दो साथी पठानों के साथ ऊपर वाली बर्थ पर चढ़ गया। यही क्रिया शायद रेलगाड़ी के अन्य डिब्बों में भी चल रही थी। डिब्बे में तनाव आ गया। लोगों ने बतियाना बंद कर दिया। तीनों-के-तीनों पठान ऊपरवाली बर्थ पर एक साथ बैठे चुपचाप नीचे की ओर देखे जा रहे थे। सभी मुसाफिरों की आँखें पहले से ज्यादा खुली-खुली, ज्यादा शंकित-सी लगीं। यही स्थिति संभवत: गाड़ी के सभी डिब्बों में व्याप्त हो रही थी।

'कौन-सा स्टेशन था यह?' डिब्बे में किसी ने पूछा।

'वजीराबाद,' किसी ने उत्तर दिया।

जवाब मिलने पर डिब्बे में एक और प्रतिक्रिया हुई। पठानों के मन का तनाव फौरन ढीला पड़ गया। जबकि हिंदू-सिक्ख मुसाफिरों की चुप्पी और ज्यादा गहरी हो गई। एक पठान ने अपनी वास्कट की जेब में से नसवार की डिबिया निकाली और नाक में नसवार चढ़ाने लगा। अन्य पठान भी अपनी-अपनी डिबिया निकाल कर नसवार चढ़ाने लगे। बुढ़िया बराबर माला जपे जा रही थी। किसी-किसी वक्त उसके बुदबुदाते होंठ नजर आते, लगता, उनमें से कोई खोखली-सी आवाज निकल रही है।

अगले स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी तो वहाँ भी सन्नाटा था। कोई परिंदा तक नहीं फड़क रहा था। हाँ, एक भिश्ती, पीठ पर पानी की मशकल लादे, प्लेटफार्म लाँघ कर आया और मुसाफिरों को पानी पिलाने लगा।

'लो, पियो पानी, पियो पानी।' औरतों के डिब्बे में से औरतों और बच्चों के अनेक हाथ बाहर निकल आए थे।

'बहुत मार-काट हुई है, बहुत लोग मरे हैं। लगता था, वह इस मार-काट में अकेला पुण्य कमाने चला आया है।'

गाड़ी सरकी तो सहसा खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जाने लगे। दूर-दूर तक, पहियों की गड़गड़ाहट के साथ, खिड़कियों के पल्ले चढ़ाने की आवाज आने लगी।

किसी अज्ञात आशंकावश दुबला बाबू मेरे पासवाली सीट पर से उठा और दो सीटों के बीच फर्श पर लेट गया। उसका चेहरा अभी भी मुर्दे जैसा पीला हो रहा था। इस पर बर्थ पर बैठा पठान उसकी ठिठोली करने लगा - 'ओ बेंगैरत, तुम मर्द ए कि औरत ए? सीट पर से उट कर नीचे लेटता ए। तुम मर्द के नाम को बदनाम करता ए।' वह बोल रहा था और बार-बार हँसे जा रहा था। फिर वह उससे पश्तो में कुछ कहने लगा। बाबू चुप बना लेटा रहा। अन्य सभी मुसाफिर चुप थे। डिब्बे का वातावरण बोझिल बना हुआ था।

'ऐसे आदमी को अम डिब्बे में नईं बैठने देगा। ओ बाबू, अगले स्टेशन पर उतर जाओ, और जनाना डब्बे में बैटो।'

मगर बाबू की हाजिरजवाबी अपने कंठ में सूख चली थी। हकला कर चुप हो रहा। पर थोड़ी देर बाद वह अपने आप उठ कर सीट पर जा बैठा और देर तक अपने कपड़ों की धूल झाड़ता रहा। वह क्यों उठ कर फर्श पर लेट गया था? शायद उसे डर था कि बाहर से गाड़ी पर पथराव होगा या गोली चलेगी, शायद इसी कारण खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जा रहे थे।

कुछ भी कहना कठिन था। मुमकिन है किसी एक मुसाफिर ने किसी कारण से खिड़की का पल्ला चढ़ाया हो। उसकी देखा-देखी, बिना सोचे-समझे, धड़ाधड़ खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जाने लगे थे।

बोझिल अनिश्चत-से वातावरण में सफर कटने लगा। रात गहराने लगी थी। डिब्बे के मुसाफिर स्तब्ध और शंकित ज्यों-के-त्यों बैठे थे। कभी गाड़ी की रफ्तार सहसा टूट कर धीमी पड़ जाती तो लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगते। कभी रास्ते में ही रुक

जाती तो डिब्बे के अंदर का सन्नाटा और भी गहरा हो उठता। केवल पठान निश्चित बैठे थे। हाँ, उन्होंने भी बतियाना छोड़ दिया था, क्योंकि उनकी बातचीत में कोई भी शामिल होने वाला नहीं था।

धीरे-धीरे पठान ऊँघने लगे जबकि अन्य मुसाफिर फटी-फटी आँखों से शून्य में देखे जा रहे थे। बुढ़िया मुँह-सिर लपेटे, टाँगें सीट पर चढ़ाए, बैठा-बैठा सो गई थी। ऊपरवाली बर्थ पर एक पठान ने, अधलेटे ही, कुर्ते की जेब में से काले मनकों की तसबीह निकाल ली और उसे धीरे-धीरे हाथ में चलाने लगा।

खिड़की के बाहर आकाश में चाँद निकल आया और चाँदनी में बाहर की दुनिया और भी अनिश्चित, और भी अधिक रहस्यमयी हो उठी। किसी-किसी वक्त दूर किसी ओर आग के शोले उठते नजर आते, कोई नगर जल रहा था। गाड़ी किसी वक्त चिंघाड़ती हुई आगे बढ़ने लगती, फिर किसी वक्त उसकी रफ्तार धीमी पड़ जाती और मीलों तक धीमी रफ्तार से ही चलती रहती।

सहसा दुबला बाबू खिड़की में से बाहर देख कर ऊँची आवाज में बोला - 'हरबंसपुरा निकल गया है।' उसकी आवाज में उत्तेजना थी, वह जैसे चीख कर बोला था। डिब्बे के सभी लोग उसकी आवाज सुन कर चौंक गए। उसी वक्त डिब्बे के अधिकांश मुसाफिरों ने मानो उसकी आवाज को ही सुन कर करवट बदली।

'ओ बाबू, चिल्लाता क्यों ए?', तसबीह वाला पठान चौंक कर बोला - 'इदर उतरेगा तुम? जंजीर खींचूँ?' अैर खी-खी करके हँस दिया। जाहिर है वह हरबंसपुरा की स्थिति से अथवा उसके नाम से अनभिज्ञ था।

बाबू ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल सिर हिला दिया और एक-आध बार पठान की ओर देख कर फिर खिड़की के बाहर झाँकने लगा।

डब्बे में फिर मौन छा गया। तभी इंजन ने सीटी दी और उसकी एकरस रफ्तार टूट गई। थोड़ी ही देर बाद खटाक-का-सा शब्द भी हुआ। शायद गाड़ी ने लाइन बदली थी। बाबू ने झाँक कर उस दिशा में देखा जिस ओर गाड़ी बढ़ी जा रही थी।

'शहर आ गया है।' वह फिर ऊँची आवाज में चिल्लाया - 'अमृतसर आ गया है।' उसने फिर से कहा और उछल कर खड़ा हो गया, और ऊपर वाली बर्थ पर लेटे पठान को संबोधित करके चिल्लाया - 'ओ बे पठान के बच्चे! नीचे उतर तेरी माँ की... नीचे उतर, तेरी उस पठान बनानेवाले की मैं...'

बाबू चिल्लाने लगा और चीख-चीख कर गालियाँ बकने लगा था। तसबीह वाले पठान ने करवट बदली और बाबू की ओर देख कर बोला -'ओ क्या ए बाबू? अमको कुच बोला?'

बाबू को उत्तेजित देख कर अन्य मुसाफिर भी उठ बैठे।

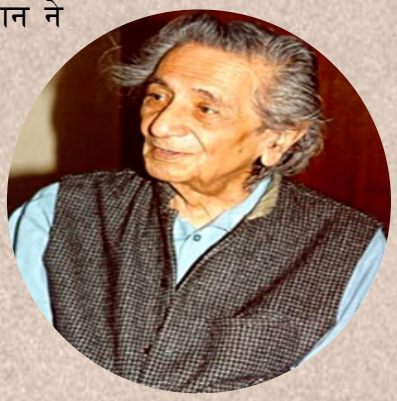

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे **भीष्म साहनी** (8 अगस्त 1915 - 11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर ने। इन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया।

भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1980 में एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। उनके उपन्यास तमस पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था।

प्रमुख रचनाएँ: ***उपन्यास:*** *झरोखे, तमस, बसन्ती, मायादास की माडी, कुन्तो, नीलू निलिमा निलोफर,* ***कहानी संग्रह:*** *मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर,* ***नाटक:*** *हनूश, माधवी, कबीरा खड़ा बजार में, मुआवज़े,* ***आत्मकथा:*** *बलराज माय ब्रदर,* ***बालकथा:*** *गुलेल का खेल। साभार:* www.hindisamay.com

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया राजपत्र

भारतीय विद्या भवन (*भवन*) एक गैर लाभ, गैर धार्मिक, गैर राजनीतिक, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है| भवन भारतीय परंपराओं को ऊपर उठाये हुए, उसी समय में आधुनिकता और बहुसंस्कृतिवाद की जरूरतों को पूरा करते हुए विश्व के शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| भवन का आदर्श, '*पूरी दुनिया एक ही परिवार है*' और इसका आदर्श वाक्य: '*महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो*' हैं|

दुनिया भर में भवन के अन्य केन्द्रों की तरह, भवन ऑस्ट्रेलिया अंतर-सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति की सही समझ, बहुसंस्कृतिवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और ऑस्ट्रेलिया में व्यक्तियों, सरकारों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंधों का पालन करता है|

अपने संविधान से व्युत्पन्न भवन ऑस्ट्रेलिया **राजपत्र** का कार्य है:

- जनता की शिक्षा अग्रिम करना, इनमें हैं:
    1. विश्व की संस्कृतियां (दोनों आध्यात्मिक और लौकिक),
    2. साहित्य, संगीत, नृत्य,
    3. कलाएं,
    4. दुनिया की भाषाएँ,
    5. दुनिया के दर्शनशास्त्र |
- ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक समाज के सतत विकास के लिए संस्कृतियों की विविधता के योगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा|
- समझ और व्यापक रूप से विविध विरासत के ऑस्ट्रेलियाई लोगों की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय विविधता की स्वीकृति को बढ़ावा|
- भवन की वस्तुओं को बढ़ावा देने या अधिकृत रूप में शिक्षा अग्रिम करने के लिए संस्कृत, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं और नियतकालिक पत्रिकाओं, वृत्तचित्रों को संपादित, प्रकाशित और जारी करना|
- भवन के हित में अनुसंधान अध्ययन का पालन करना और शुरू करना और किसी भी अनुसंधान को जो कि शुरू किया गया है, के परिणाम को मुद्रित और प्रकाशित करना|

www.bhavanaustralia.org

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण है कि क्या वो जो विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न स्थानों में इसके लिए काम करते हैं और जो इसके कई संस्थानों में अध्ययन करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में एक मिशन की भावना विकसित कर सकें, चाहे एक छोटे माप में, जो उन्हें मौलिक मूल्यों का अनुवाद करने में सक्ष्म बनाएगा|

एक संस्कृति की रचनात्मक जीवन शक्ति इसमें होती है: कि क्या जो इससे सम्बंधित हैं उनमें 'सर्वश्रेष्ठ', हालांकि उनकी संख्या चाहे कितनी कम हो, हमारे चिरयुवा संस्कृति के मौलिक मूल्यों तक जीने में आत्म-पूर्ति पाते हों|

यह एहसास किया जाना चाहिए कि दुनिया का इतिहास उन पुरुषों की एक कहानी है जिन्हें खुद में और अपने मिशन में विश्वास था| जब एक उम्र विश्वास के ऐसे पुरुषों का उत्पादन नहीं करती तो इसकी संस्कृति अपने विलुप्त होने के रास्ते पर है| इसलिए भवन की असली ताकत इसकी अपनी इमारतों या संस्थाओं की संख्या जो यह आयोजित करती है, में इतनी ज्यादा नहीं होगी, ना ही इसकी अपनी संपत्ति की मात्रा और बजट में, और इसकी अपनी बढ़ती प्रकाशन, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में भी नहीं होगी| यह इसके मानद और वृत्तिकाग्राही, समर्पित कार्यकर्ताओं के चरित्र, विनम्रता, निस्वार्थता और समर्पित काम में होगी| उस अदृश्य दबाव को केवल जो अकेला मानव प्रकृति को रूपांतरित कर सकता है, को खेल में लाते हुए केवल वे अकेले पुनर्योजी प्रभावों को रिहा कर सकते हैं|

पाठक कहते हैं

हम नए कवियों / लेखकों से उनके लेखों / काव्य रचनाओं के नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में पर्काशन हेतु योगदान की अपेक्षा करते हुए आमंत्रित करते हैं। सभी लेख / काव्य रचनाएँ नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में निशुल्क पर्काशित होंगी।

-संपादक मंडल, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

हमें भवन ऑस्ट्रेलिया की ईमारत निर्माण परियोजना के लिए आर्थिक सहायता की तलाश है।

कृपया उदारता से दान दें।

नोट: हम अपने पाठकों की स्पष्टवादी, सरल राय आमंत्रित करते हैं।

हमारे साथ विज्ञापन दें!

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में विज्ञापन देना आपकी कंपनी के ब्रांड के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है और यह आपके उत्पादों और / या सेवाओं का एक सांस्कृतिक और नैतिक संपादकीय वातावरण में प्रदर्शन करता है।

भवन ऑस्ट्रेलिया भारतीय परंपराओं को ऊँचा रखने और उसी समय बहुसंस्कृतिवाद एकीकरण को प्रोत्साहित करने का मंच है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : info@bhavanaustralia.org

महात्मा गाँधी कहते हैं

सच्चा अर्थशास्त्र तो न्याय बुद्धि पर आधारित अर्थशास्त्र है।

अहिंसा परम श्रेष्ठ मानव-धर्म है, पशु-बल से वह अनंत गुना महान् और उच्च है।

मुठ्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

सत्याग्रह बलप्रयोग के विपरीत होता है। हिंसा के संपूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है।

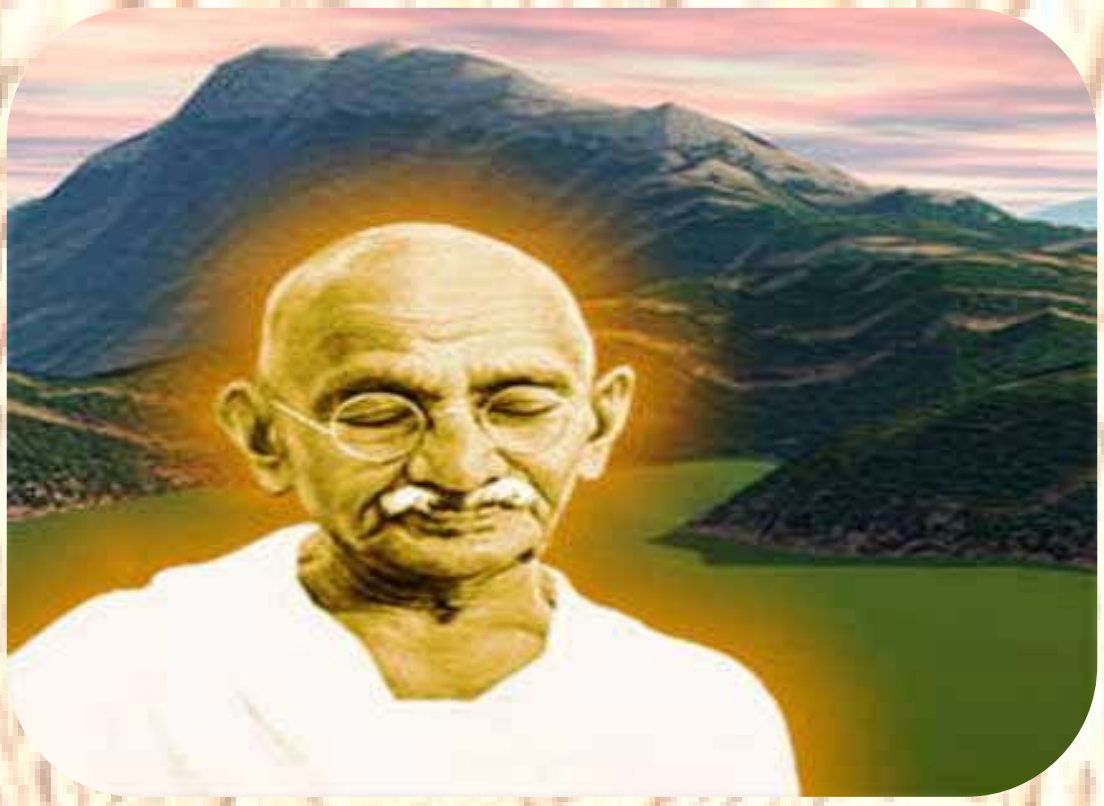

taxation & business guru

Taxation Guru - using their knowledge and expertise to stay ahead of the every changing taxation legislation.

Whether you're a company, partnership, trust or sole trader, you need help with Super, Salary packages, Fringe benefits, Investments and deductions.

Call the Taxation Guru, the power to help you make the right decisions.

We endeavour to take the burden off your shoulders and make life easy by providing a broad range of tax related services.

Contact us at:
Suite 100, Level 4, 515 Kent Street, Sydney 2000
t: 1300 GURU4U (487848) & +612 9267 9255
e: gambhir@bmgw.com www.taxationguru.com.au

THE TAX INSTITUTE

CHARTERED TAX ADVISER

BMG GROUP

www.taxationguru.com.au